॥ ग्रन्थ प्रभु के विग्रह हैं॥

वृन्दावन शोध संस्थान

शोध एवं प्रकाशन अनुभाग

Research & Publication Dept.

सत्र 2021-22 के अन्तर्गत

शोध-प्रकाशन अनुभाग द्वारा सम्पन्न कार्य

डॉ० राजेश शर्मा

शोध अधिकारी, वृ.शो.सं.

॥ ग्रन्थ प्रभु के विग्रह हैं॥

शोध एवं प्रकाशन अनुभाग

वार्षिक कार्य विवरण 2021-22 : एक दृष्टि

1. प्रकाशन- 01-11

- **अनुभाग द्वारा सत्रान्तर्गत 04 पुस्तकों (ब्रज की होली, ब्रज के लोक दई-देवता, ब्रज गीता तथा संस्थान द्वारा ब्रज की होली पर केन्द्रित प्रदर्शनी के अभिलेखन पर आधारित काफी टेबल पुस्तक) का प्रकाशन**
- **श्रीचैतन्य महाप्रभु से जुड़े सांस्कृतिक परिदृश्य पर एकाग्र ब्रोशर का प्रकाशन**
- **ब्रज सलिला पत्रिका के 02 अंकों का प्रकाशन**
- **संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों का पत्रक**

2.शोध परिचर्चा/व्याख्यान- 12-18

संस्थान द्वारा विभिन्न अवसरों (ब्रज संस्कृति संस्करण-2021, सप्त दिवसीय सांझी महोत्सव-2021, डॉ॰रामदास गुप्त स्मृति व्याख्यान एवं अन्य अवसरों पर) निम्नानुसार शोध परिचर्चा/व्याख्यानों का आयोजन कराया गया। उक्त शृंखला में जयपुर आर्ट समिट, शास्त्र सेवा प्रकल्प, वृन्दावन एवं संस्कृति विभाग उ॰प्र॰ आदि के सहयोग से भी कार्यक्रम आयोजित हुए। इस दौरान संस्कृति प्रेमी विज्ञजनों ने निम्नानुसार विविध अवसरों पर सहभागिता प्रदान की-

- **युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ के अन्तर्गत ब्रज संस्कृति संस्करण - 2021 के दौरान प्रतिभागी विद्वान** 17
- **साँझी महोत्सव - 2021 के अवसर पर प्रतिभागी विद्वान** 05
- **डॉ॰ रामदास गुप्त स्मृति व्याख्यान - प्रो॰ राजाराम शुक्ल** 01

  (पूर्व कुलपति संपूर्णानंद वि.वि.वाराणसी)

- **ब्रज बिहारी भगवान जगन्नाथ स्वामी - डॉ॰ अनीता बोस,** कोलकाता 01

24

3.प्रदर्शनी - 19-34

सत्रान्तर्गत **03 शोधपरक प्रदर्शनियां** आयोजित की गईं। उक्त क्रम में साँझी महोत्सव-2021 **ब्रज साँझी की सांस्कृतिक यात्रा** विषयक सप्त दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। इस हेतु विविध विषयों के सापेक्ष संदर्भ सामग्री अलग-अलग वीथिकाओं के माध्यम से निम्नानुसार प्रस्तुत की गई। इसी शृंखला में युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और संदर्भ परियोजनान्तर्गत जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में ब्रज संस्कृति संस्करण - 2021 के दौरान ब्रज की कला संस्कृति पर आधारित **पाँच दिवसीय प्रदर्शनी** तथा श्रीचैतन्य प्रेम संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में **शिक्षाष्टक** विषयक प्रदर्शनी का आयोजन सम्पन्न हुआ।

4.साँझी कार्यशाला- 35-37

वृंदावन शोध संस्थान के द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय साँझी महोत्सव कार्यशाला के अंतर्गत विद्यार्थियों ने विभिन्न साँझी घरानों के कलाविदों से परंपरा की विविधताओं को जाना। श्रीराधारमण मंदिर के आचार्य एवं प्रसिद्ध कलाविद सुमित गोस्वामी तथा भट्टजी घराने के आचार्य शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट एवं विभुकृष्ण भट्टने साँझी रचना के विभिन्न चरणों की जानकारी दी। इस दौरान हनुमान प्रसाद धानुका, वेणु यूनिक जू.हा.स्कूल के 27 प्रतिभागियों सहित विभिन्न देशी-विदेशी संस्कृति प्रेमी विज्ञजनों ने सांझी की सूक्ष्मताओं को समझा। कार्यशाला में सम्मिलित प्रतिभागी विषय सम्मत व्याख्यानों से भी लाभान्वित हुए। उक्त सम्बन्धी विवरण व्याख्यान/परिचर्चा अध्याय में प्रस्तुत हैं।

5.वाह्य स्थल कार्यक्रम (आउटरीच प्रोग्राम) - 38-41

सत्रान्तर्गत अनुभाग निम्नानुसार वाह्य स्थल कार्यक्रम (आउटरीच प्रोग्राम) किये गये-

1.शास्त्र सेवा प्रकल्प के संयुक्त तत्वावधान में साँझी परम्परा के प्रसिद्ध भट्टजी घराने के सानिध्य में स्थानीय श्रीमदनमोहन मंदिर, भट्टजी की हवेली पर कार्यक्रम।

2.उत्तर मध्य सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज एवं संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में श्रीरंग मंदिर, वृन्दावन तथा परिक्रमा मार्ग स्थित गोपाल घाट पर मणिपुर के कलाकारों द्वारा पुंगचोलम एवं ढोलचोलम नृत्य की प्रस्तुति।

3.इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं दात्री फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वि-दिवसीय साँझी महोत्सव में संस्थान की ओर से सहभागिता।

4.संस्थान की गतिविधियों, कार्य-उद्देश्य तथा संचालित प्रकल्पों के विषय में माननीय संस्कृति, भारत सरकार श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी को अवगत कराने तथा युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति परियोजनान्तर्गत आयोजन ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 में आमंत्रित करने के उद्देश्य से माननीय मंत्री जी के आवास पर विषय सम्मत परिचर्चा करते हुए संस्थार के ब्रोशर का लोकार्पण कराया गया।

5.उक्त शृंखलान्तर्गत ब्रज सलिला पत्रिका हेतु लेख प्राप्ति, व्याख्यान एवं कार्यक्रमों सहभागिता हेतु लगभग 50 विज्ञजनों से सम्पर्क एवं वार्ता।

6.विशिष्टजन-संस्थान परिभ्रमण 42-48

सत्रान्तर्गत अनुभाग द्वारा निम्नानुसार 13 विशिष्टजन परिभ्रमण सम्पन्न हुए-

01. **श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी** (माननीय संस्कृति मंत्री भारत सरकार)

02. **श्रीमती हेमा मालिनी जी** (माननीय सांसद महोदया)

03. **श्रीशैलजाकांत मिश्र जी** (उपाध्यक्ष, ब्रज तीर्थ विकास परिषद, उ.प्र.)

04. **आदरणीया बेबीरानी मौर्य जी** (पूर्व राज्यपाल, उत्तराखंड)

05. **श्रीहरीश रौतेला जी** (प्रान्त प्रचारक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ)

06. **श्रीअद्वैत गणनायक जी** (महानिदेशक, नेशनल मार्डन आर्ट गैलरी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

07. **श्रीरवीन्द्र सिंह जी** (पूर्व सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

08. **श्रीअभिषेक नारंग जी** (उप-सचिव, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार)

09. **प्रो. राजाराम शुक्ला जी** (पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानंद वि.वि. वाराणसी एवं वैदिक दर्शन विभागाध्यक्ष, काशी हिन्दू वि.वि. वाराणसी)

10. **श्री जे.एल. श्रीवास्तव जी** (सिटी मजिस्ट्रेट, मथुरा)

11. **प्रो॰ नीलिम्प त्रिपाठी जी** (प्रो.महर्षि योगी वैदिक वि.वि.)

12. **श्रीमती अनघा श्रीनिवासन जी** (सी.ई.ओ. श्रीरंग मंदिर, वृन्दावन)

13. **स्वामी इन्द्रद्युम्न जी** (इस्कॉन, वृन्दावन)

7.युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में पाँच दिवसीय ब्रज संस्कृति संस्करणड- 49-65

युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में आयोजित पाँच दिवसीय ब्रज संस्कृति संस्करण - 2021 के अन्तर्गत व्याख्यान से पृथक कार्य-

- **विशिष्ट कला प्रदर्शन**
- **पारंपरिक कला प्रस्तुति**
- **श्रीकृष्ण कला शिविर**

8.सांस्कृतिक गतिविधि - 66-71

वृन्दावन शोध संस्थान एवं 'शास्त्र सेवा प्रकल्प' के संयुक्त तत्वावधान में युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ परियोजना अंतर्गत श्रीकृष्ण संस्कृति प्रेमी विदेशी साधकों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम निम्नानुसार सम्पन्न हुए-

- गोपी डॉट्स
- पुष्पांजलि
- कालियदमन प्रस्तुति
- श्याम नृत्य
- भगवतगीता थियेटर
- रास नृत्य

9.अनुभाग गतिविधि : प्रेस की नजर से ... 72-86

अनुभाग द्वारा सत्रान्तर्गत निम्नानुसार 60 समाचार विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित कराये गये।

10.अन्य गतिविधियाँ— 87

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

प्रकाशन

- **अनुभाग द्वारा सत्रान्तर्गत 04 पुस्तकों (ब्रज की होली, ब्रज के लोक दई-देवता, ब्रज गीता तथा संस्थान द्वारा ब्रज की होली पर केन्द्रित प्रदर्शनी के अभिलेखन पर आधारित काफी टेबल पुस्तक) का प्रकाशन**
- **श्रीचैतन्य महाप्रभु से जुड़े सांस्कृतिक परिदृश्य पर एकाग्र ब्रोशर का प्रकाशन**
- **ब्रज सलिला पत्रिका के 02 अंकों का प्रकाशन**
- **संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों का पत्रक**

ब्रज की होली शीर्षक पुस्तक (डिमाई आकार) 264 पृष्ठों में निम्नांकित अध्याय क्रम के अनुसार तैयार करते हुए प्रकाशन कराया गया-

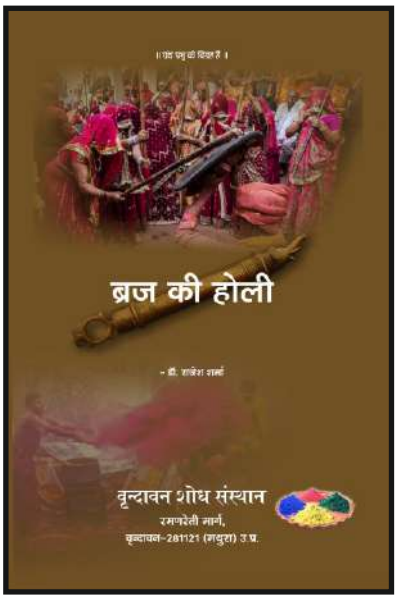

- **अध्यक्षीय**
- **प्रकाशकीय**
- **दो शब्द**
- **ब्रज की होली : एक दृष्टि**
- **ब्रज संस्कृति - सन्दर्भों में होली**
  (उत्सव विस्तार, होली खेल, होली के रंग,
  शृंगार-आभूषण तथा भोग (प्रसाद), वाद्य यंत्र)
- **ब्रज की होली : विविध परम्परायें**
  (समाज गायन एवं कीर्तन, होली की गाली,ठिठोली और
  फगुवा, रसिया, तान, चौपई, लावनी, चरकुला एवं
  कला-परम्पराओं में होली, सब मिलि गाई होली)
- **ब्रजभाषा साहित्य में होली [परिशिष्ट]**
- **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**
- **छायाचित्र**
- **सचिव की कलम से...**
- **भूमिका**
- **सम्पादकीय**

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

प्रकाशन

संस्थान द्वारा 2020-21 (सत्रांत) में आयोजित ब्रज की होली विषयक प्रदर्शनी का सचित्र अभिलेखन निम्नांकित बिन्दुओं के अनुसार करते हुए कॉफी टेबल आकार में 63 पृष्ठों की पुस्तिका तैयार करते हुए प्रकाशन किया गया-

- **ब्रज की होली एक दृष्टि**
- **प्रदर्शनी परिचय**
- **प्रदर्शनी झलकियाँ**
- **चरकुला नृत्य**
- **दृष्टि संरक्षण की**
- **समाज गायन एवं कला में होली**
- **परम्परा के संरक्षण में संस्थान का प्रयास**
- **हरित्रयी, अष्टछाप एवं भक्त साधकों का होली साहित्य**
- **होरी कौ उत्स : फगवा, गारी और ठिठोली**
- **चैतन्य महाप्रभु के जन्म का उल्लास होली**
- **सब मिलि गाई होरी**
- **होरी की लिखित परम्परा**
- **तूलिका से संरक्षित होरी के रंग**
- **हर युग में खास ब्रज की होली**

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

ब्रज की होली : विशिष्टांश

[कॉफी टेबिल]

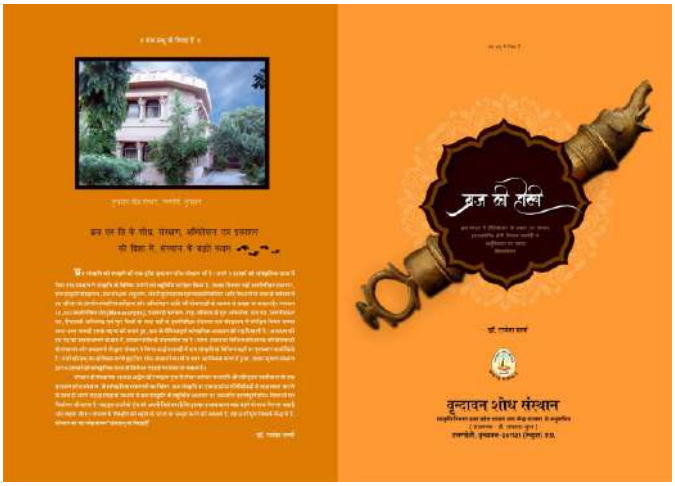

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

ब्रज की होली : विशिष्टांश

[कॉफी टेबिल]

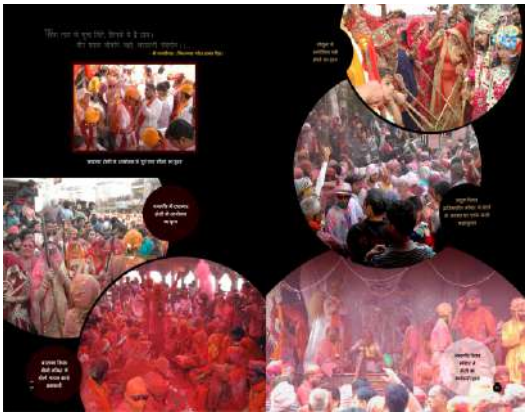

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

वृंदावन शोध संस्थान एवं श्रीचैतन्य प्रेम संस्थान का सह-अनुष्ठान
30 सितम्बर 2021

शिक्षाष्टक-ब्रोशर

- श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा कथित "शिक्षाष्टक" का सांसद महोदया श्रीमती हेमा मालिनी जी के स्वर में वीडियो प्रस्तुतिकरण उनकी उपस्थिति में संस्थान–प्रेक्षागृह में कराया गया। श्रीचैतन्य प्रेम संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस अनुष्ठान के दौरान शिक्षाष्टक शीर्षक ब्रोशर के अन्तर्गत संस्थान संग्रह की पाण्डुलिपियाँ, पेंटिग्स ब्रज संस्कृति संग्रहालय में प्रदर्शित गौड़ीय परम्परा विषयक फलक तथा भारत सरकार द्वारा महाप्रभु पर एकाग्र डाक टिकट एवं सिक्के आदि संयोजित करने के साथ ही शिक्षाष्टक का अंग्रेजी, संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया गया। प्रेक्षागृह में आयोजित कार्यक्रम के दौरान ब्रोशर का लोकार्पण सांसद महोदया श्रीमती हेमा मालिनी, उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के उपाध्यक्ष शैलजाकांत मिश्र, आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी, देवकीनन्दन ठाकुर जी सचिव प्रवीण गुप्ता, डॉ॰ ब्रजभूषण चतुर्वेदी एवं डॉ॰ राजेश शर्मा द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

लोकार्पण : शिक्षाष्टक विवरणिका

शिक्षाष्टक ब्रोशर का लोकार्पण करते तीर्थ विकास परिषद के उपाध्यक्ष शैलजाकांत मिश्र, सांसद महोदया हेमा मालिनी, आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी, संस्थान सचिव प्रवीण गुप्ता, भागवताचार्य श्रीदेवकीनंदन ठाकुरजी, डॉ.राजेश शर्मा एवं डॉ0 ब्रजभूषण चतुर्वेदी।

शिक्षाष्टक कार्यक्रम के दौरान उपस्थित संस्कृति प्रेमी।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

- **संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने वाले 5 दिवसीय ब्रज संस्कृति संस्करण–2021** (दिनांक 7 से 11 दिसंबर पर्यन्त) **ब्रोशर, फ्लैक्स, बैनर डिजाइन सहित तैयार करवाये गये। उक्त संदर्भ में निम्नानुसार चरणबद्ध रूप से कार्य संपादित हुए–**

- वृन्दावन शोध संस्थान और जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में 'युग–युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ' परियोजनान्तर्गत 7–11 दिसंबर पर्यन्त आयोजित 05 दिवसीय कला–संस्कृति उत्सव हेतु रूपरेखा तैयार करते हुए प्रतिदिन के क्रम में **श्रीकृष्ण कला शिविर, विशिष्ट कला प्रदर्शन, कला संस्कृति गोष्ठी, ग्रंथ लोकार्पण, पारम्परिक प्रस्तुति एवं संगीत प्रस्तुतिकरण** के माध्यम से श्रीकृष्ण संस्कृति विषयक कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये। तदनुसार कार्य विवरण–

[I] युग–युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में आयोजित 7 से 11 दिसंबर पर्यंत पाँच दिवसीय कार्यक्रम में उद्घाटन अथवा समापन सत्र में माननीय संस्कृति मंत्री को आमंत्रित करने हेतु दिल्ली यात्रा कर उनसे संस्थान–संदर्भ में वार्ता करते हुए आमंत्रित किया गया। इस दौरान प्रेस कांफ्रेस का आयोजन कराया गया।

[ii] दिनांक 5 दिसंबर 2021 को आयोजन के संदर्भ में प्रेस कांफ्रेंस संस्थान के सभागार में सम्पन्न कराई गई। इस हेतु पत्रकार एवं विषय से जुड़े प्रबुद्धजनों को आमंत्रित किया गया।

[iii] कार्यक्रम के अन्तर्गत **ब्रज की विलुप्त होती साँझी कला, समाज गायन में रसोपासना का वर्तमान स्वरूप, ब्रज की लोक कलाओं का सेवा में विनियोग एवं प्रकृति में व्याप्त श्रीकृष्ण** आदि पक्षों पर क्रमशः आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी, पद्मश्री मोहनस्वरूप भाटिया, डॉ॰ माधव भट्ट, डॉ॰ अमिता खरे, सुमित गोस्वामी, डॉ॰ चंद्रप्रकाश शर्मा, मधुकर चतुर्वेदी, डॉ॰ वंदना तैलंग, मैत्री गोस्वामी, श्रीहित सुकृतलाल गोस्वामी, डॉ॰ शैलेंद्रकृष्ण भट्ट, डॉ॰ इन्दु राव आदि विद्वानों के व्याख्यान सम्पन्न कराने के साथ ही अन्य स्थानीय प्रबुद्धजनों के विचार संकलित किये गये।

[iv] युग–युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में आयोजन के अंतर्गत श्रीकृष्ण संस्कृति से अभिप्रेत **सितार वादन, पंचतंत्री बेला वादन, पखावज वादन, रसिया गायन एवं वाणी पद गायन** आदि मनोरथ क्रमशः डॉ॰ अंकित भट्ट (वनस्थली–जयपुर), रविशंकर भट्ट, गो॰ दिव्येश कुमार जी महाराज (इंदौर घराना), डॉ॰ सीमा मोरवाल एवं श्रीमदनगोपाल ब्रजवासी के साथ समन्वय करते हुए सम्पन्न कराये गये।

[v] युग–युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में प्रदर्शनकारी कला प्रस्तुतिकरण के क्रम में **ढांढी–ढांढिन नृत्य, रज शिल्पांकन, तमाशा शैली, स्याम नृत्य, थाली मांढना एवं पट्ट चित्र गायन** आदि प्रस्तुतियां संपन्न कराते हुए कलाविदों से विषय सम्मत जानकारियां संकलित की गईं।

[vi] पांच दिवसीय श्रीकृष्ण कला शिविर के अंतर्गत दो दर्जन से अधिक प्रतिभागियों द्वारा श्रीकृष्ण कथा प्रसंगों का प्रस्तुतिकरण करते हुए 14 छवियां संस्थान संग्रह में संस्कृति प्रेमियों के परिदर्शन हेतु संकलित कराईं गईं।

[vii] पांच दिवसीय आयोजन के अंतर्गत श्रीकृष्ण संस्कृति कला वीथिका का प्रस्तुतिकरण जयपुर आर्ट समिट के सहयोग से किया गया, जिनमें तीन शताब्दी पुरानी पिछवाईयां, सांझी के खाके, कीर्तन में प्रयुक्त प्राचीन मृदंग, चंदोवा एवं पेंटिंग आदि प्रमुखता से दर्शाये गये।

[viii] कार्यक्रम के शुभारंभ दिवस में **उत्सव कोलम, मंगल वैद्यम** (नादस्वरम्–थाविल) दक्षिण शैली से कराये जाने हेतु जयपुर आर्ट समिट के सहयोग से संपर्क किया गया।

[ix] कार्यक्रम अंतर्गत विशिष्ट कला प्रदर्शन के क्रम में **संस्कृत कैलीग्राफी** के प्रस्तुतिकार हरिशंकर वालोठिया, **अभिनय कला** (डिम्पल शाह), **पंख चित्रांकन** (अदिति अग्रवाल), **सीकांकन** द्वारा श्रीकृष्ण प्रस्तुति (अमिता चक्रवर्ती), **नील कृष्णांकन** (ब्रजवल्लभ उदयवाल), **अग्नि कला** (अजीत कुमार) के सहयोग से कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन हुआ। इसी क्रम में इंदौर से पधारे प्रणय गोस्वामी के द्वारा अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि गोविन्द स्वामी के पद **आगै गाय पाछै गाय...** के आधार पर **पेन–पेंसिल चित्रांकन** में सहयोग, **देवनागरी कैलीग्राफर** बुज्जो बाबू, **पुराचित्रों से सजीव जीर्णोद्धार** में श्रीराम सिंह तथा **अभिनय कला** का प्रस्तुतिकरण करने वाले श्रीमुकेश सिंह, इन्दर सलीम के प्रस्तुतिकरण में सहयोग प्रदान किया गया। उक्त कार्यों के साथ ही विदेशी चित्रकार श्रीरसिकानंद, संजीव शर्मा **सजीव चित्रांकन** निधि भारती **काफी चित्रांकन** तथा **अग्नि कला** का प्रस्तुतिकरण करने वाले श्री अजीत कुमार जी का सहयोग परिचर्चा करते हुए कुछ कलाकारों का प्रेस–साक्षात्कार कराने हेतु समन्वय कर स्टोरी तैयार की गई।

[x] कार्यक्रम में पधारे श्रीअद्वैत गणनायक डायरेक्टर जनरल, नेशनल मॉर्डन आर्ट गैलरी से संस्थान–संदर्भ में परिचर्चा के साथ ही कार्यक्रम विषयक सविस्तार जानकारी दी गई। इसी क्रम में इंडियन हैवीटेट सेंटर, संस्कृति मंत्रालय की निदेशक डॉ॰ अलका पांडेय आदि का व्याख्यान तथा पद्मश्री श्रीश्याम शर्मा आदि से परिचर्चा की गई। समापन दिवस के कार्यक्रम में माननीय संस्कृति मंत्री, भारत सरकार श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी को संस्थान परिभ्रमण कराते हुए गतिविधियों पर चर्चा की गई।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

ब्रज लोक के दई–देवता व उनके गीत

- अनुभाग द्वारा सत्र 2021–22 अन्तर्गत सर्वेक्षण कार्य श्रृंखला में 'ब्रज लोक के दई–देवता व उनके गीत' शीर्षक पुस्तक का प्रकाशन कराया गया। पुस्तक का सम्पादन डॉ॰ सीमा मोरवाल द्वारा किया गया। इसी क्रम में डॉ॰ ब्रजभूषण चतुर्वेद (प्रभारी ग्रंथागार) द्वारा रचित 'ब्रज–गीता' पुस्तक का प्रकाशन सम्पन्न हुआ।

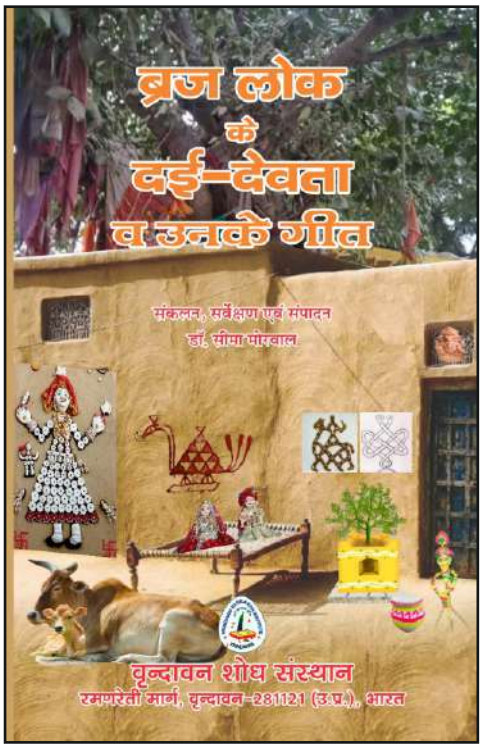

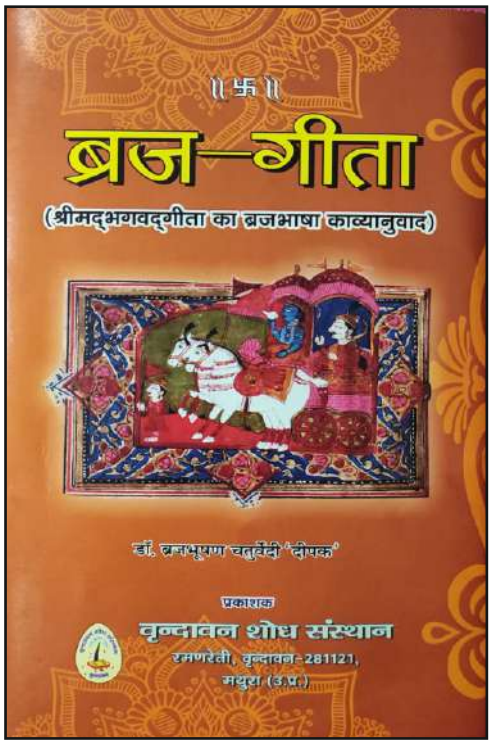

गीतामृत–प्रकाशनाधीन

- गीतामृत पुस्तक में प्रूफ संशोधन का कार्य पूर्ण करते हुए मुद्रणार्थ तैयारी की गई। इसके साथ ही विशिष्टजनों को शुभकामना संदेश हेतु पत्र प्रेषित किये गये।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

ब्रज सलिला

[साँझी विशेषांक]

ब्रज सलिला पत्रिका (साँझी विशेषांक) के रूप में निम्नांकित विषयों के साथ प्रकाशित की गई-

[i] ब्रज का लोक शिल्प : साँझी	- पद्मश्री मोहनस्वरूप भाटिया
[ii] वृन्दावन की साँझी कला एक विलुप्त होती परम्परा	- आचार्य शैलेन्द्र कृष्ण भट्ट
[iii] लोक एवं देवालयी परम्परा में साँझी उत्सव	- डॉ.चन्द्रप्रकाश शर्मा
[iv] साँझी : ब्रज का धार्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक अनुष्ठान	- डॉ.राजेन्द्रकृष्ण अग्रवाल
[v] ब्रज की विलुप्त होती लोक कला साँझी	- डॉ.मंजू शर्मा
[vi] साँझी तेरे रूप अनेक	- डॉ.सीमा मोरवाल
[vii] ब्रजमण्डल और साँझी की परम्परा	- श्रीमती प्रगति शर्मा
[viii] साँझी कला या अनुष्ठान	- सुमित गोस्वामी
[ix] ब्रज की लोक-कलाएँ	- डॉ॰ कैलाशचन्द्र भाटिया
[x] चलौ सखी फुलवा बीनन कूं साँझी कौ दिन आयौ	- डॉ.राजेश शर्मा
[xi] साँझी : एक भाव	- करूणेश उपाध्याय

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

ब्रज सलिला

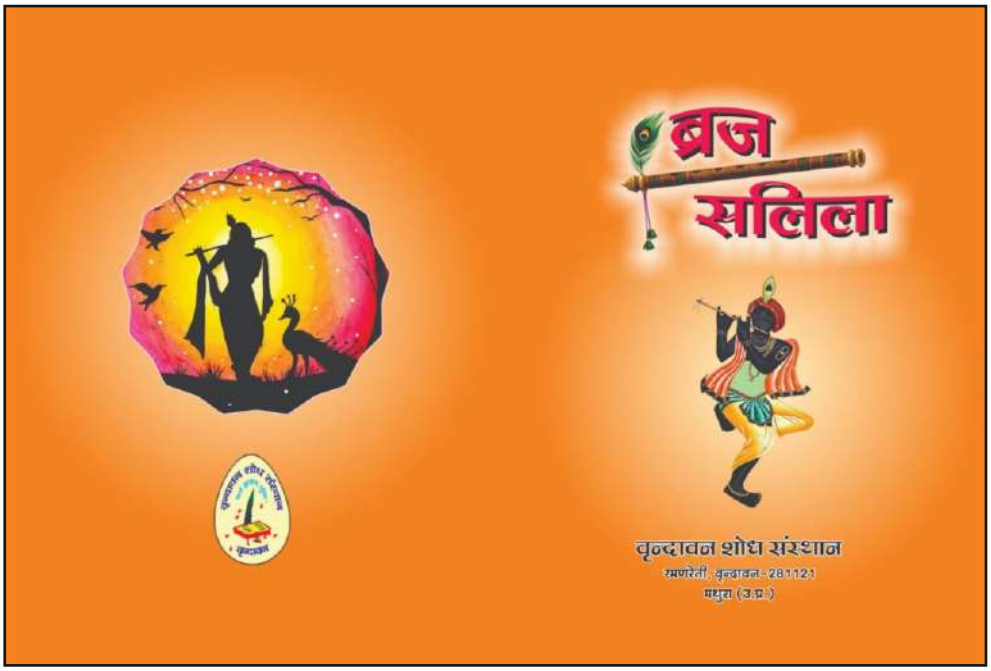

- अष्टछापी संगीत घराना – प्रो॰ सूर्यप्रसाद दीक्षित
- ब्रज के रास रंगमंच का अन्य कलाओं से संबंध – डॉ॰ विजेंद्र प्रताप सिंह
- ब्रज संस्कृति और इसके उपजीव्य – डॉ॰ सत्यदेव आजाद
- नाम विदित गोपेश्वर जिनकौ, ते वृंदा कानन कुतवार –डॉ॰ राजेश शर्मा
- ब्रजभूमि और ब्रज की लोक कलायें – आचार्य नीरज शास्त्री
- श्रीब्रजभूमि माहात्मय – भूपेश मिश्रा
- वैष्णवाचार्य और ब्रज – दिनेश सिंह
- अब कें बसंत न्यारे ई खेलैं – डॉ॰ राजेंद्ररंजन चतुर्वेदी
- वैश्विक संदर्भ में होली और संगीत – डॉ॰राजेंद्रकृष्ण अग्रवाल
- ब्रज होली और चरकुला – डॉ॰ सीमा मोरवाल
- श्रीकृष्ण : मुरलीधर भी एवं चक्रधर भी – डॉ॰ इन्दु राव
- रसिकवर श्रीहित श्यामादासजी – डॉ॰ जयेश खण्डेलवाल

शोध - प्रकाशन गतिविधि : 2021-22

शोध परिचर्चा/व्याख्यान

संस्थान द्वारा विभिन्न अवसरों (ब्रज संस्कृति संस्करण-2021, सप्त दिवसीय सांझी महोत्सव-2021, डॉ॰रामदास गुप्त स्मृति व्याख्यान एवं अन्य अवसरों पर) निम्नानुसार शोध परिचर्चा/व्याख्यानों का आयोजन कराया गया। उक्त श्रृंखला में जयपुर आर्ट समिट, शास्त्र सेवा प्रकल्प, वृन्दावन एवं संस्कृति विभाग उ॰प्र॰ आदि के सहयोग से भी कार्यक्रम आयोजित हुए। इस दौरान संस्कृति प्रेमी विज्ञजनों ने निम्नानुसार विविध अवसरों पर सहभागिता प्रदान की-

- **युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ के अन्तर्गत ब्रज संस्कृति संस्करण - 2021 के दौरान प्रतिभागी विद्वान** 17
- **साँझी महोत्सव - 2021 के अवसर पर प्रतिभागी विद्वान** 05
- **डॉ॰ रामदास गुप्त स्मृति व्याख्यान - प्रो॰ राजाराम शुक्ल** 01
  (पूर्व कुलपति संपूर्णानंद वि.वि.वाराणसी)
- **ब्रज बिहारी भगवान जगन्नाथ स्वामी - डॉ॰ अनीता बोस,** कोलकाता 01

24

शोध – प्रकाशन गतिविधि : 2021-22

शोध परिचर्चा/व्याख्यान

युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ परियोजनान्तर्गत
वृन्दावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में
पाँच दिवसीय 'ब्रज संस्कृति संस्करण'
[7-11 दिसम्बर 2021]

'ब्रज की विलुप्त होती साँझी कला'

- पद्मश्री मोहनस्वरूप भाटिया
- डॉ॰ सीमा मोरवाल
- डॉ॰ माधव भट्ट
- आचार्य विभुकृष्ण भट्ट
- आचार्य सुमित गोस्वामी

'समाज गायन में रसोपासना का वर्तमान स्वरूप'

- आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी
- डॉ॰ चन्द्रप्रकाश शर्मा
- श्रीमाधवेन्द्र भट्ट
- मधुकर चतुर्वेदी

शोध – प्रकाशन गतिविधि : 2021-22

शोध परिचर्चा/व्याख्यान

युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ परियोजनान्तर्गत
वृन्दावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में
पाँच दिवसीय 'ब्रज संस्कृति संस्करण'
[7-11 दिसम्बर 2021]

'ब्रज की लोक कलान कौ सेवा में विनियोग'

- **पद्मश्री श्याम शर्मा**
- **श्रीशरद गोस्वामी**
- **आचार्य वृंदावन विहारी गोस्वामी**
- **श्रीहित सुकृतलाल गोस्वामी**

'प्रकृति में व्याप्त श्रीकृष्ण'

- **पद्मश्री श्याम शर्मा**
- **डॉ॰ इन्दु राव**
- **श्री आर॰डी॰ पालीवाल**
- **डॉ॰ ब्रजभूषण चतुर्वेदी**
- **डॉ॰ राजेश शर्मा**

शोध - प्रकाशन गतिविधि : 2021-22

शोध परिचर्चा/व्याख्यान

वृन्दावन शोध संस्थान में 30 सितम्बर से 6 अक्टूबर पर्यन्त आयोजित सात दिवसीय साँझी महोत्सव 2021 के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम शृंखला में निम्नानुसार विद्वानों ने विचार अभिव्यक्त किये-

- **आचार्य शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट - वृन्दावन की साँझी कला : एक विलुप्त होती परम्परा**
- **डॉ॰ चन्द्रप्रकाश शर्मा - लोक एवं देवालयी परम्परा में साँझी उत्सव**
- **डॉ॰ मंजू शर्मा - विलुप्त होती साँझी कला**
- **आचार्य सुमित गोस्वामी - साँझी कला या अनुष्ठान**
- **आचार्य विभुकृष्ण भट्ट - भाव पगी साँझी**

संस्थान में सांझी महोत्सव 2021 के अवसर पर आयोजित शोध परिचर्चा के दौरान मंचासीन आचार्य विभुकृष्ण भट्ट, आचार्य मालव गोस्वामी, आचार्य शैलेंद्रकृष्ण भट्ट, आचार्य सुमित गोस्वामी एवं स्वामी श्रीइंद्रद्युम्न जी महाराज।

संस्थान में सांझी महोत्सव 2021 के अवसर पर आयोजित शोध परिचर्चा के दौरान मंचासीन आचार्य शैलेंद्रकृष्ण भट्ट, आचार्य सुमित गोस्वामी, श्रीवृंदावन विहारी, दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिंदी कालेज की एसोसिएट प्रो.मंजू शर्मा एवं अन्य।

शोध – प्रकाशन गतिविधि : 2021–22

शोध परिचर्चा/व्याख्यान

वृन्दावन शोध संस्थान के 54वें स्थापना दिवस समारोह

(24 नवंबर 2021)

संस्थान के 54वें स्थापना दिवस के अवसर पर मंच पर विद्यमान निदेशक डॉ॰ अजय कुमार पाण्डेय, आचार्य शैलेंद्रकृष्ण भट्ट, स्वामी महेशानंद सरस्वती आचार्य श्रीवत्स, सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि0वि0वाराणसी के पूर्व कुलपति एवं काशी हिन्दू वि0वि0वाराणसी के वैदिक दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो0राजाराम शुक्ला एवं सचिव प्रवीण गुप्ता।

वृन्दावन शोध संस्थान में बुधवार को 54वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान सम्पूर्णानन्द वि0वि0 के पूर्व कुलपति एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के वैदिक दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो0राजाराम शुक्ला ने कहा जीवात्मा के स्वरूप के सम्बन्ध में दर्शन में अनेक अवधारणायें हैं, मुख्यत: अद्वैतवादी शंकराचार्य जीवात्मा को व्यापक मानते हैं। जबकि माध्व सम्प्रदाय, वल्लभ एवं गौड़ीय में इसे अणु माना गया है। गौड़ीय सम्प्रदाय के उद्भट आचार्य जीव गोस्वामी ने अपनी सर्व संवादिनी टीका में अनेक युक्तियों एवं श्रुति प्रमाण के आधार पर जीवात्मा की अणुता सिद्ध की है। मुख्य अतिथि स्वामी महेशानन्द सरस्वती ने कहा संस्थान के प्रयास सराहनीय है। हमें ब्रज संस्कृति की सेवा में मनोयोग के साथ आगे बढ़ना चाहिए। आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी ने कहा नई पीढ़ी को संस्कृति के साथ जोड़ने की दिशा में विभिन्न प्रकार के प्रयास किये जाने चाहिए। डॉ0शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट ने कहा भक्ति ही जीव के उद्धार का एकमात्र साधन है। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी इन्द्रद्युम्न जी महाराज द्वारा प्रस्तुत हरिनाम संकीर्तन एवं अतिथियों द्वारा ठा0श्रीबांकेबिहारी के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। संस्थान निदेशक डॉ0 अजय कुमार पाण्डेय द्वारा अतिथियों का स्वागत पटुका उढाकर किया गया।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

प्रेस की नजर से ...

54वाँ स्थापना दिवस समारोह

[24 नवंबर 2021]

वृन्दावन शोध संस्थान के 54वें स्थापना दिवस के अवसर पर 'ब्रज का नालंदा है वृन्दावन शोध संस्थान' शीर्षक आलेख दैनिक जागरण समाचार पत्र में प्रकाशित कराया गया, साथ ही अमर उजाला समाचार पत्र में भी उक्त विषयक आलेख प्रकाशित हुआ।

दैनिक जागरण

मथुरा, बुधवार 24 नवंबर, 2021

www.jagran.com

दवा के मनमाने दाम बने बड़ी बीमारी 15 जम्मू-कश्मीर में पिछली सरकारों में पिछले दरवाजे से हुई ढाई लाख भर्तियां 17

ब्रज संस्कृति का नालंदा है यह शोध संस्थान

वृंदावन शोध संस्थान का 54वां स्थापना दिवस आज, शोध संस्थान में संरक्षित हैं तीस हजार पांडुलिपियां

संवाद सहयोगी, वृंदावन: हजारों दुर्लभ ग्रंथ, सैकड़ों पांडुलिपि, लाखों कवित्त। वृंदावन शोध संस्थान यहां की संस्कृति और भक्ति परंपरा को समझने के लिए छोटा-सा नालंदा है। ऐसी जगह जहां ब्रज की परंपरा के ऐसे हजारों हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो अन्य कहीं देखने को भी नहीं मिल पाते हैं।

ग्रंथ प्रभु के विग्रह हैं। वृंदावन की रमणरेती स्थित वृंदावन शोध संस्थान की दीवार पर यही ध्येय वाक्य दर्ज है। दुर्लभ ग्रंथों के प्रति इस अनुराग ने इस जगह को पांडुलिपियों का भंडारगृह बना दिया है। आज यहां सैकड़ों छात्र ब्रज संस्कृति पर शोध करने आते हैं।

54 साल पूरे कर चुके संस्थान में भक्तिकाल की प्राचीन पांडुलिपियों के साथ दानपत्र, संकल्पपत्र, फरमानों का संरक्षण हो रहा है। ये नागरी, फारसी तथा बंगला लिपियों में हैं। करीब 30 हजार पांडुलिपियों में वैष्णव संप्रदाय गौड़ीय, निम्बार्क, बल्लभ, राधाबल्लभ, हरिदासीय संप्रदाय के रचित साहित्य, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष विषयों की पोथियां हैं। यही नहीं, चैतन्य महाप्रभु की परंपरा के षड्गोस्वामियों से जुड़े दस्तावेज तथा पांडुलिपियों की श्रृंखला शोध के लिए संरक्षित है।

वृंदावन शोध संस्थान के ग्रंथागार में संरक्षित पांडुलिपियां • जागरण

वृंदावन शोध संस्थान के ग्रंथागार में संरक्षित जीव गोस्वामी की संकल्प-पत्री का फोटो, जो सन 1606 मदनपर भट्ट के हस्तलेख में शामिल है • जागरण

वृंदावन शोध संस्थान में संरक्षित फारसी लिपि में फरमान की प्रतिलिपि • जागरण

शासी परिषद करती है संचालन

वृंदावन शोध संस्थान का संचालन सामान्य परिषद व शासी परिषद करती है। सामान्य परिषद में देशभर के अलग-अलग शहरों के सेवानिवृत्त अधिकारी, प्रोफेसरों, समाज में उल्लेखनीय योगदान देने वाले 74 लोगों को रखा जाता है। 19 सदस्यीय शासी परिषद में सात सदस्य केंद्र व प्रदेश सरकार के पदेन अधिकारी हैं। सात सदस्यों का चयन सामान्य परिषद द्वारा मतदान के आधार पर किया जाता है, एक डायरेक्टर और चार डायरेक्टर द्वारा नामित सदस्य शामिल हैं। अध्यक्ष व सचिव का चयन भी मतदान के जरिए तीन साल के लिए होता है। वर्तमान में संस्थान के अध्यक्ष आरडी पालीवाल, सचिव सुशीला गुप्ता और निदेशक के डा. अजय कुमार पांडे संभाल रहे हैं। संस्थान के संचालन के लिए फंडिंग केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय एवं उप्र संस्कृति विभाग द्वारा की जाती है।

इन विषयों पर हो रहा शोध

- अमेरिकी हार्वर्ड विवि के शोधार्थी राधा श्री डेम्मन हरिनामामृत व्याकरण के तुलनात्मक अध्ययन पर शोध कर रहे हैं।
- यूएसए के शिव चतुर्वेदी भागवत द्वितीय स्कंध, रसिकन वेदन साख्या रूप गोस्वामी कृत विदग्ध माधव नाटक पर शोध कर रहे हैं।
- पोलैंड के एबीओ विवि फिनलैंड के शोधार्थी मैसर्स श्री सम्मोहन तंत्र, नृसिंह परिचर्या, वैष्णव स्मृति, मूर्ति प्रमाण पर अपना शोध कर रहे हैं।
- मुंबई, प्रयागराज, दिल्ली, केरल, कोलकाता, काशी हिंदू विवि, बेल्लूर मठ, पंजाब विवि, एएमयू अलीगढ़, आइआइटी गुवाहाटी असम, धर्म प्रचार मंडल जम्मू आदि के 48 शोधार्थी यहां शोध कर रहे हैं।

पांडुलिपियां पुरानी हैं, करीब चार सौ साल पुरानी पांडुलिपियों को संरक्षित करना व डिजिटलाइजेशन और डिस्प्ले करने का इरादा है। भगवान श्रीकृष्ण और ब्रज पर आधारित फिल्मों के जरिए स्कूली बच्चों और पढ़े लोगों को भी जोड़ने का प्रयास करेंगे।

डा. अजय कुमार पांडे, निदेशक

इस तरह हुई शुरुआत

हाथरस में जन्मे डा. रामदास गुप्त लंदन के स्कूल आफ इंडियन एंड अफ्रीकन स्टडीज में प्रवक्ता थे। कलानिधियों के संग्रह, संरक्षण, शोध व प्रकाशन के लिए 24 नवंबर वर्ष 1968 में विहार पंचमी के दिन वृंदावन में उन्होंने शोध संस्थान की स्थापना की थी। केंद्रीय मंत्री डा. कर्ण सिंह ने इसका लोकार्पण किया था।

ये है दुर्लभ संग्रह

शोध संस्थान में वर्ष 1606 के दौरान लिखा गया जीव गोस्वामी का मूल संकल्प पत्र, श्रीमद्भागवत पितासुखी टीका, विभिन्न देशाल्वी अभिलेख, प्राचीन गौड़ीय ग्रंथागार का सूचीपत्र, विभिन्न वैष्णव संप्रदायों के तहत मुद्रण पूर्व विभिन्न कालक्रमों में सृजित पद संग्रह, ऐसे ग्रंथ और अभिलेख हैं, जो कहीं और नहीं मिलते हैं।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

प्रेस की नजर से ...

अमर उजाला

आगरा
बुधवार, 24 नवंबर 2021

भरोसा | वित्तमंत्री सीतारमण ने कहा-डिफॉल्टरों से वापस दिलाएंगे बैंकों के पैसे... | उत्तर प्रदेश

वृंदावन शोध संस्थान में सुरक्षित हैं 35 हजार पांडुलिपियां, स्थापना दिवस आज

1968 में स्कूल ऑफ इंडियन एंड अफ्रीकन स्टडीज लंदन यूनिवर्सिटी में हिंदी के प्रोफेसर डॉ. रामदास गुप्त ने की थी स्थापना

संवाद न्यूज एजेंसी

वृंदावन। वृंदावन शोध संस्थान बुधवार को 54 वां स्थापना दिवस मना रहा है। इसमें ब्रज साथ ही नागरी लिपि, उर्दू, बांग्ला, फारसी के अभिलेख के साथ तीस हजार से अधिक प्राचीन पांडुलिपियों का संग्रह है।

ब्रज की सांस्कृतिक विरासत को बचाने में वृंदावन शोध संस्थान बड़ा काम कर रहा है। इसकी स्थापना 1968 में विहार पंचमी को स्कूल ऑफ इंडियन एंड अफ्रीकन स्टडीज लंदन यूनिवर्सिटी में हिंदी के प्रोफेसर डॉ. रामदास गुप्त ने लोई बाजार स्थित हाथरस वाली धर्मशाला में की थी। बाद में शोध संस्थान को रमणरेती में शिफ्ट किया गया।

संस्थान का उद्देश्य प्राचीन पांडुलिपियों, पुरातत्व महत्व की वस्तुओं एवं ब्रज संस्कृति से संबंधित लोक पारंपरिक धरोहरों का संरक्षण करना है। वर्तमान में रमणरेती स्थित इस संस्थान का ग्रंथागार विशेष है। यहां वैष्णव संप्रदायों की पांडुलिपियां, बादशाह अकबर सहित परवर्ती शासकों के फरमान, मध्यकालीन विभिन्न रियासतों के ब्रज के मंदिरों को दिए गए दान-पत्र, संकल्प-पत्र, उत्तराधिकार-पत्र एवं प्राचीन याद्दाश्ती अभिलेख इस मौजूद हैं। आयुर्वेद, ज्योतिष, पद-संग्रह, उर्दू एवं फारसी की पांडुलिपियां भी यहां हैं।

15 हजार मुद्रित पुस्तक, शब्दकोश एवं शोध ग्रंथ मौजूद

वृंदावन। संस्थान के संदर्भ पुस्तकालय में हिंदी, बंगला, उड़िया, गुरुमुखी, अंग्रेजी, उर्दू एवं फारसी आदि भाषाओं की 15 हजार मुद्रित पुस्तकों के साथ ही विभिन्न शब्दकोश एवं शोध ग्रंथ संगृहीत हैं। ब्रज संस्कृति से जुड़े विभिन्न विषयों पर 36 शोधपरक पुस्तकें और हिंदी, संस्कृत ग्रंथों के सूची पत्रों का ... हैं। इनमें कई दुर्लभ

वृंदावन शोध संस्थान ने बीते 54 वर्षों में ब्रज संस्कृति के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पक्षों पर विविधतापूर्ण कार्य करने के साथ ही भारतीय और विदेशी शोध अध्येताओं के लिये अध्ययन का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। ब्रज में आने वाले पर्यटकों के लिये भी ब्रज ... से साक्षात्कार कराने

दैनिक जागरण

दर्शन में अनेक अवधारणाएं : प्रो. राजाराम

स्वदेश

आगरा - मुख्य संस्करण

Date 25 Nov 2021

जीवात्मा स्वरूप की अनेक अवधारणाएं -शुक्ला

वृंदावन में बीआरआई पर स्थापना दिवस समारोह में व्याख्यान देते प्रो. राजाराम शुक्ला व अन्य मंचासीन अतिथि

वृंदावन। वृंदावन शोध संस्थान का 54वां स्थापना दिवस समारोह बुधवार को विविध कार्यक्रमों के मध्य मनाया गया।

डा. रामदास गुप्त स्मृति व्याख्यान में संपूर्णानन्द विवि के पूर्व कुलपति एवं काशी हिंदू विवि के वैदिक दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो. राजाराम शुक्ला ने कहा कि जीवात्मा के स्वरूप के संबंध में अनेक अवधारणाएं हैं। इसमें मुख्यतः अद्वैतवादी शंकराचार्य जीवात्मा को व्यापक मानते हैं जबकि माध्व संप्रदाय, वल्लभ एवं गौड़ीय में इसे अणु माना गया है। गौड़ीय संप्रदाय के उद्भट आचार्य जीव गोस्वामी ने अपनी सर्व संवादिनी टीका में अनेक युक्तियों एवं श्रुति प्रमाण के आधार पर जीवात्मा की अणुता सिद्ध की है। मुख्य अतिथि स्वामी महेशानंद सरस्वती ने कहा कि हमें ब्रज संस्कृति की सेवा में मनोयोग के साथ आगे बढ़ना चाहिए। आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी ने कहा कि नई पीढ़ी को संस्कृति के साथ जोड़ने की दिशा में विभिन्न प्रयास होने चाहिए। डा. शैलेंद्रकृष्ण भट्ट ने कहा कि भक्ति ही जीव के उद्धार का एकमात्र साधन है। वहीं डा. विजया शर्मा के निर्देशन में श्रीकृष्ण लीला पर आधारित नृत्य शैली कृष्ण धारा की प्रस्तुति दी गई। उन्होंने श्रीनंदकुमार अष्टकम् सुंदरम् गोपालम् उर वनमाल..., बरसे रे बदरिया सावन की..., दीनबंधु दया करो..., खेलत अति सुख प्रीति प्रगट भई..., वृंदावन कुंज भवन नाचत गिरधारी... आदि पर मनोहारी प्रस्तुति दी। जिसमें उनका सहयोग प्रियंका पांडेल, जाग्रति गहलोत, निकिता कुशवाह, सपना मेवाड़ा एवं मौसमी दास ने किया। हारमोनियम एवं गायन पर जितेंद्र शर्मा व डा. राजकुमारी शर्मा, तबले पर उस्ताद नफीस खां, सितार पर अंबरीश गंगराडे व अंशुपायन सिन्हा ने संगत की।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी इन्द्रद्युम्न द्वारा हरिनाम संकीर्तन एवं अतिथियों द्वारा ठा. बांकेबिहारी के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ। वहीं ब्रज गीता पुस्तक का विमोचन भी किया गया। संस्थान निदेशक डा. अजय कुमार पांडेय ने अतिथियों का पटुका ओढ़ाकर स्वागत किया। इस अवसर पर सचिव प्रवीण गुप्ता, बिहारीलाल वशिष्ठ, आचार्य विभुकृष्ण भट्ट, डा. कृष्णओम सिंह, डा. कृष्णमुरारी, ईश्वरचंद्र रावत, मोहनलाल गौतम मोही, डा. विनोद बनर्जी, शीतलादेवी दासी, डा. राजेंद्रकृष्ण अग्रवाल, ओमवती शर्मा, विशेष कार्याधिकारी सतीशचंद्र दीक्षित, सुशीला गुप्ता आदि उपस्थित थे।

शोध – प्रकाशन गतिविधि : 2021-22

शोध परिचर्चा/व्याख्यान

वृंदावन शोध संस्थान द्वारा भगवान जगन्नाथ रथयात्रा के उपलक्ष्य में 'ब्रजबिहारी भगवान जगन्नाथ स्वामी' विषयक ऑनलाइन व्याख्यान श्रीमती अनीता बोस के द्वारा प्रस्तुत किया गया।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रदर्शनी

सत्रान्तर्गत **03 शोधपरक प्रदर्शनियां** आयोजित की गईं। उक्त क्रम में साँझी महोत्सव–2021 **ब्रज साँझी की सांस्कृतिक यात्रा** विषयक सप्त दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। इस हेतु विविध विषयों के सापेक्ष संदर्भ सामग्री अलग–अलग वीथिकाओं के माध्यम से निम्नानुसार प्रस्तुत की गई। इसी शृंखला में युग–युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और संदर्भ परियोजनान्तर्गत जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में ब्रज संस्कृति संस्करण – 2021 के दौरान ब्रज की कला संस्कृति पर आधारित **पाँच दिवसीय प्रदर्शनी** तथा श्रीचैतन्य प्रेम संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में **शिक्षाष्टक** विषयक प्रदर्शनी का आयोजन सम्पन्न हुआ।

[साँझी महोत्सव–2021]

विभिन्न पैनल –

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रदर्शनी [साँझी महोत्सव 2021]

विभिन्न पैनल –

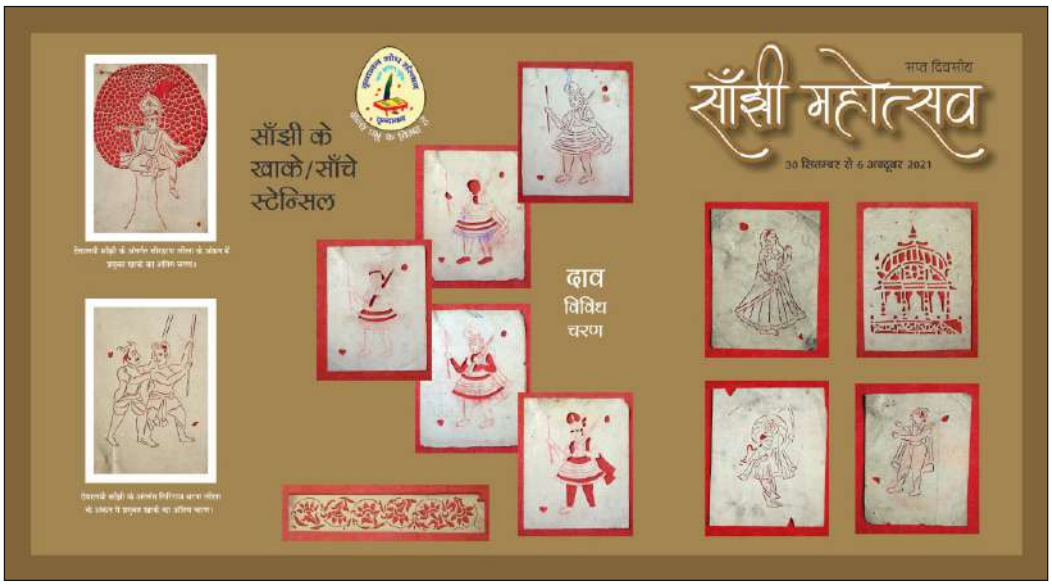

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रदर्शनी [साँझी महोत्सव 2021]

विभिन्न पैनल –

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रदर्शनी [साँझी महोत्सव 2021]

विभिन्न पैनल –

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रदर्शनी [साँझी महोत्सव 2021]

विभिन्न पैनल –

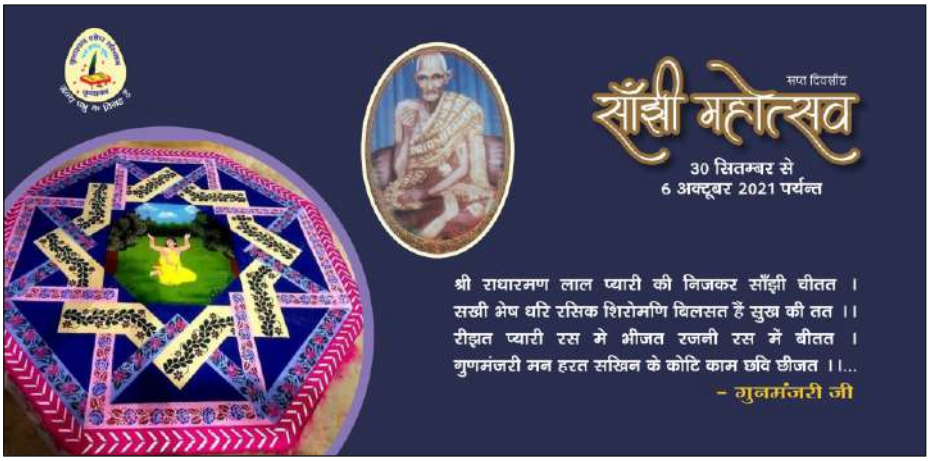

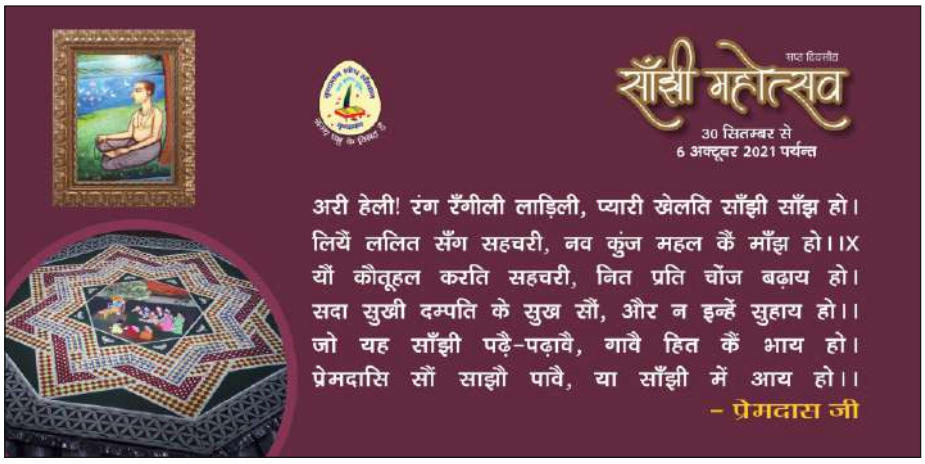

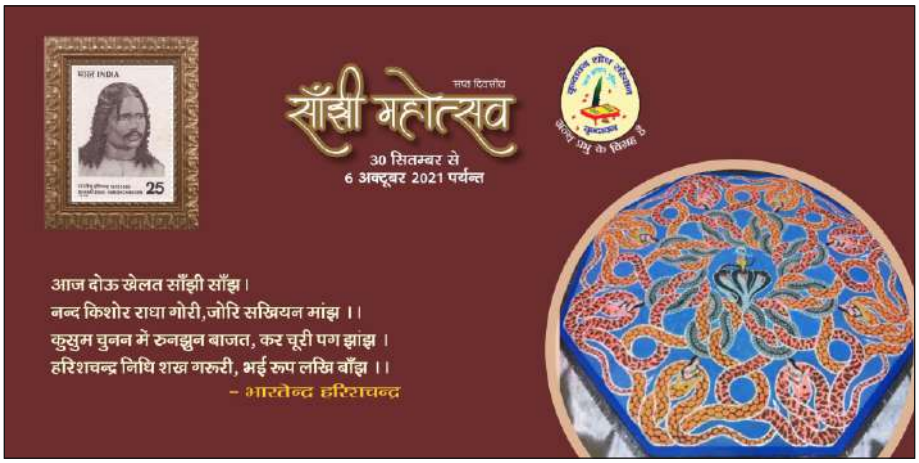

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रदर्शनी [साँझी महोत्सव 2021]

विभिन्न पैनल –

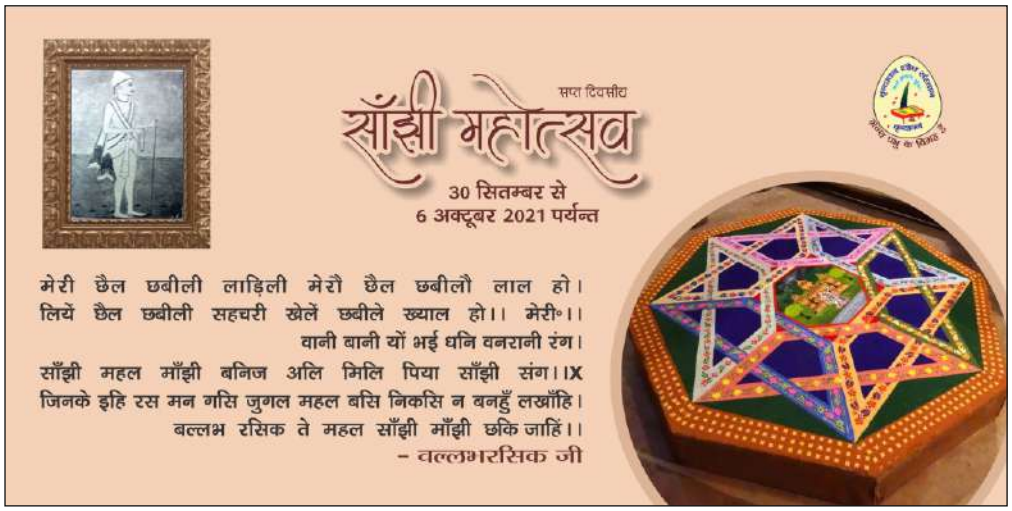

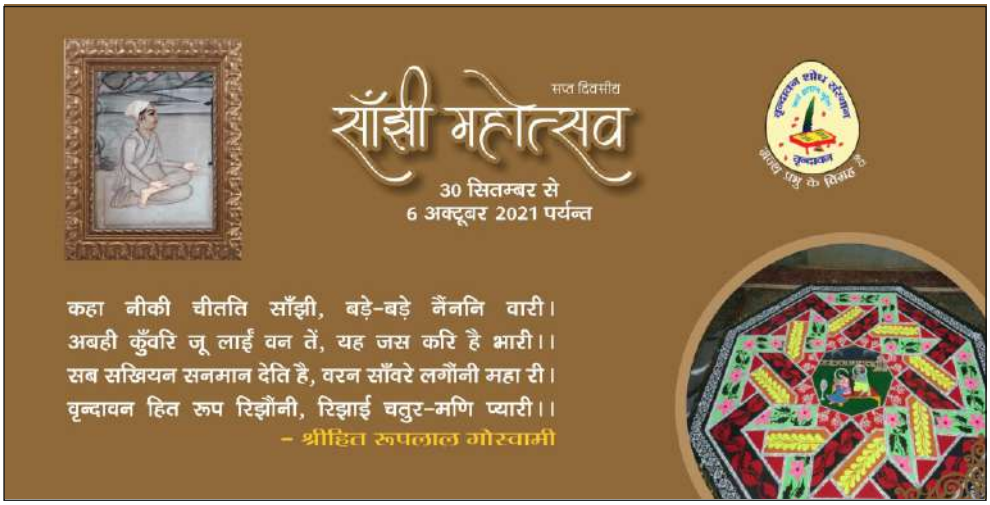

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

साँझी-प्रदर्शनी : विवरण

सात दिवसीय साँझी महोत्सव का शुभारम्भ करतीं सांसद श्रीमती हेमा मालिनी जी, तीर्थ विकास परिषद उ.प्र. के उपाध्यक्ष श्रीशैलजाकांत मिश्र, आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी एवं अन्य।

साँझी ब्रज की महत्त्वपूर्ण कला-परम्परा है। यहाँ लोक एवं देवालय दोनों धरातल पर श्रद्धा से सिंचित साँझी ने अलग-अलग कालक्रमों में स्वयं को विविधताओं के साथ प्रतिष्ठित किया है। इस प्रतिष्ठा का मूल भाव यहाँ देवालयी साँझी के कलागत सौन्दर्य में दर्शित होता है तो ब्रजमण्डल की लोक साँझी भी स्वयं को भाव और कला दोनों रूपों में अभिव्यक्त किये हुए है। भाव और कला की दृष्टि से देवालयी साँझी को गहरे तक समझें तो साहित्य, कला और संगीत तीनों रूपों में इस साँझी की व्याप्ति इसे खास बनाती है। 05 दशकों के दीर्घ अंतराल में संस्थान ने साँझी से जुड़ी सांस्कृतिक यात्रा को बहुविधि सहेजा है। संस्थान के हस्तलिखित ग्रंथागार में विद्यमान साँझी विषयक दुर्लभ पोथियों का संकलन हो या संग्रहालय में साँझी का परिदर्शन कराती वीथिका और इसी के साथ संस्थान के डिजिटाइजेशन तथा सर्वेक्षण अनुभाग में संरक्षित साँझी विषयक सामग्री, सभी कुछ संस्थान द्वारा संरक्षित साँझी विषयक सामग्री, सभी कुछ संस्थान द्वारा संरक्षित साँझी परम्परा की यश गाथा कहते हैं। साँझी कला को नई पीढ़ी के साथ हेतु प्रशिक्षण कार्यशाला तथा संस्कृति अध्येताओं के मध्य परिचर्चाओं द्वारा संवाद स्थापित करने के क्रम में "साँझी संवाद" का शृंखलाबद्ध आयोजन भी इस परम्परा के संरक्षण की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में एक है। संस्थान द्वारा "ब्रज की साँझी" शीर्षक पुस्तक का प्रकाशन कराने के साथ ही गत वर्ष आयोजित "साँझी-संदर्भ यात्रा" विषयक प्रदर्शनी की काफी टेबल आकार में पुस्तक प्रकाशित की गई। वर्तमान सत्रान्तर्गत ब्रज की साँझी परम्परा पर केन्द्रित सात दिवसीय कार्यशाला, प्रदर्शनी एवं विचार गोष्ठी का आयोजन परियोजनान्तर्गत 30 सितम्बर से 6 अक्टूबर 2021 पर्यन्त किया गया।

सप्त दिवसीय साँझी महोत्सव का शुभारम्भ सांसद महोदया श्रीमती हेमा मालिनी, ब्रज तीर्थ विकास परिषद उ.प्र. के उपाध्यक्ष शैलजाकांत मिश्र एवं आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयी छात्र-छात्राओं ने साँझी प्रशिक्षण कार्यशाला में सहभागिता की, वहीं साँझी के प्रसिद्ध घरानों से पधारे कलाविदों ने अपने हुनर साझा किये। कार्यक्रम के अंतर्गत साँझी परंपराओं की विविधताओं का प्रस्तुतिकरण के साथ ही कलाविद आचार्य सुमित गोस्वामी के द्वारा सृजित साँझी चित्र प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी के अवलोकनार्थ उत्तराखण्ड की राज्यपाल बेबीरानी मौर्य का शुभागमन भी हुआ। शास्त्र सेवा प्रकल्प के संयुक्त तत्वावधान में एक दिन विदेशी अतिथियों के सान्निध्य में साँझी विचार गोष्ठी तथा आउटरीच कार्यक्रम (भट्टजी की हवेली) में सम्पन्न हुआ। तदोपरान्त द्वितीय चरण में परियोजनान्तर्गत जयपुर आर्ट समिट और वृन्दावन शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में विषय केन्द्रित संगोष्ठी आयोजित की गई।

ब्रज की साँझी विषयक प्रदर्शनी का अवलोकन करतीं सांसद श्रीमती हेमा मालिनी जी एवं अन्य।

वृन्दावन शोध संस्थान में गुरूवार को सप्त दिवसीय सांझी महोत्सव - 2021 का शुभारम्भ सांसद श्रीमती हेमा मालिनी जी, आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी एवं उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के उपाध्यक्ष शैलजाकान्त मिश्र द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। इस दौरान 'ब्रज सांझी की सांस्कृतिक यात्रा' विषयक प्रदर्शनी तथा जल सांझी का परिदर्शन आगंतुक महानुभावों द्वारा किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी जी ने कहा सांझी ब्रज की महत्वपूर्ण कला परंपरा है। पितृ पक्ष के दौरान 16 दिनों तक होने वाले सांझी मनोरथ के अन्तर्गत साहित्य, संगीत और कला तीनों का समन्वय देखते ही बनता है। संस्थान के सचिव प्रवीण गुप्ता ने कहा संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले सांझी महोत्सव का उद्देश्य यही है कि ब्रज में आने वाले श्रद्धालुजन तथा संस्कृतिप्रेमी शोध अध्येता ब्रज संस्कृति की इस गौरवशाली परम्परा से साक्षात्कार कर सकें।

सप्त दिवसीय ब्रज की साँझी प्रदर्शनी का अवलोकन करतीं उत्तराखण्ड की पूर्व राज्यपाल बेबीरानी मौर्य जी एवं अन्य।

समन्वयक डॉ.राजेश शर्मा ने कहा संस्थान ने अपने पांच दशकों की शोध यात्रा में संस्कृति के विभिन्न पक्षों को बहुविधि सहेजा है। सांझी महोत्सव-2021 के अंतर्गत आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला, व्याख्यान तथा कलाविद सम्मान आदि के माध्यम से हमारा उद्देश्य है कि नई पीढ़ी के मन में सांझी परंपरा के प्रति जागरूकता का भाव उत्पन्न हो। मथुरा-वृंदावन नगर निगम के उपसभापति राधाकृष्ण पाठक ने

सप्त दिवसीय ब्रज की साँझी विषयक प्रदर्शनी का अवलोकन करतीं उत्तराखण्ड की पूर्व राज्यपाल बेबीरानी मौर्य जी एवं अन्य।

कहा कला परंपराओं के संरक्षण में संस्थान द्वारा किये जा रहे प्रयास सराहनीय है। इस अवसर पर सांझी कलाविद वैष्णवाचार्य सुमित गोस्वामी द्वारा जल सांझी का प्रस्तुतिकरण किया गया।

वृन्दावन शोध संस्थान में आयोजित सप्तदिवसीय सांझी महोत्सव – 2021 के अंतर्गत शुक्रवार को सांझी प्रशिक्षण कार्यशाला एवं देवालयी परिप्रेक्ष्य में ब्रज की सांझी विषय पर व्याख्यान तथा विद्यार्थियों द्वारा प्रदर्शनी परिभ्रमण आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस अवसर पर डॉ॰चंद्रप्रकाश शर्मा ने कहा सांझी केवल कला के रूप में ही नहीं बल्कि उपासना धरातल पर अपनी अभिव्यक्ति आरंभ से ही विविधताओं के साथ मुखरित करती रही है। विभिन्न वैष्णव संप्रदायों में सांझी से जुड़े साहित्य द्वारा इस महत्व को समझा जा सकता है। उन्होंने कहा सांझी से जुड़ा हुआ साहित्य, संगीत तथा कलागत सौंदर्य ब्रज की इस समृद्ध परंपरा की गौरवगाथा कहता है। स्वागत भाषण के दौरान संस्थान के नवागत निदेशक डॉ.अजय कुमार पांडेय ने कहा सांझी ब्रज की महत्वपूर्ण परंपरा है। संस्थान द्वारा ब्रज की कला परंपराओं के संदर्भ में उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे हैं। संस्थान द्वारा सांझी महोत्सव – 2021 के आयोजन का उद्देश्य यही है कि नई पीढ़ी कला परंपराओं से अवगत हो सके। निवर्तमान निदेशक सतीशचंद्र दीक्षित ने कहा कला परंपराओं के संरक्षण एवं नई पीढ़ी को इनसे जोड़ने की दिशा में संस्थान सदैव प्रयासरत रहा है। कार्यक्रम के दौरान सांझी विशेषज्ञ आचार्य सुमित गोस्वामी द्वारा हनुमान प्रसाद धानुका एवं वेणु यूनिक जूनियर स्कूल से आये 27 प्रतिभागियों ने सांझी का प्राथमिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ ठा.श्रीबांकेबिहारी जी की वंदना से हुआ।

सप्त दिवसीय ब्रज की साँझी कला प्रशिक्षण कार्यशाला के अवसर पर साँझी का पूजन करते श्रीइन्द्रद्युम्न स्वामी जी, आचार्य शैलेंद्रकृष्ण भट्ट, साथ में आचार्य विभुकृष्ण भट्ट, आचार्य सुमित गोस्वामी एवं अन्य।

वृन्दावन शोध संस्थान द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय सांझी महोत्सव में जनमानस का उत्साह देखते ही बनता था। विद्यार्थी एवं संस्कृति प्रेमी लोग जहां सांझी प्रशिक्षण कार्यशाला के माध्यम से इस कला की बारीकियों को समझा, वहीं प्रदर्शनी का अवलोकन तथा विद्वतजनों द्वारा प्रस्तुत सांझी विषयक व्याख्यानों को सुन लोग लाभान्वित हुए। कार्यक्रम के अंतर्गत रविवार को दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिन्दी विश्वविद्यालय की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ॰ मंजू शर्मा ने सांझी कला परंपरा के विलुप्त पक्ष विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए कहा हमें आधुनिकता के साथ-साथ अपनी परंपरा को भी एक हाथ से

थामे रखना है। युवाओं इस दिशा में आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा सांझी परंपरा का अखिल भारतीय विस्तार तथा ब्रज की सांझी से जुड़ी विशेषताएं इसका गौरव बोध करातीं हैं।

सप्त दिवसीय ब्रज - साँझी महोत्सव के अवसर पर अवलोकनार्थ पधारे विद्यार्थी छात्र-छात्रायें एवं अन्य।

भट्ट जी घराने से सांझी कला विशेषज्ञ डॉ.शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट ने कहा सांझी कला को साझा करने से इस परंपरा का संरक्षण और प्रोत्साहन संभव है। उन्होंने कहा संस्थान द्वारा आयोजित सांझी महोत्सव के माध्यम से नई पीढ़ी का इस परंपरा से साक्षात्कार होना सराहनीय है। उन्होंने कहा आज के विद्यार्थी ही संस्कृति के भावी कर्णधार हैं। हम इस पौध को संस्कारित कर संस्कृति संरक्षण की अच्छी आधारशिला रख सकते हैं।

कलाविद सुमित गोस्वामी ने कहा सांझी से जुड़े साहित्य में इस परंपरा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। उन्होंने कहा विभिन्न वाणीकारों द्वारा सृजित सांझी संबंधी साहित्य से राधाकृष्ण की सांझी लीलाओं के प्रसंग देखते ही बनते हैं। आचार्य वृंदावनबिहारी गोस्वामी ने कहा सांझी रचना युगल सरकार की सेवा का ही एक अंग है। संस्थान निदेशक डॉ०अजय कुमार पांडेय ने स्वागत भाषण के दौरान कहा संस्कृति की सेवा तथा संरक्षण में नई पीढ़ी की भागीदारी बहुत जरूरी है। वृंदावन शोध संस्थान इस दिशा में व्यापक दृष्टि के साथ संलग्न है कि वर्तमान पीढ़ी के युवा अपनी कला परंपरा के प्रति जागरूक बने रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ.राजेश शर्मा द्वारा किया गया।

वृन्दावन शोध संस्थान में आयोजित सांझी महोत्सव के अंतर्गत मंगलवार को स्थानीय प्रशिक्षिणार्थियों सहित विदेशी संस्कृति प्रेमियों ने भी सहभागिता की। इस अवसर पर सांझी कला के प्रति विदेशी जनों का आकर्षण देखते ही बन रहा था। इन्द्रद्युम्न स्वामी जी ने कहा वर्तमान में श्रीकृष्ण भक्ति से जुड़ी इस कला के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है। डॉ.सीमा मोरवाल ने ब्रज के लोक जगत में बनने वाली सांझी के संदर्भ में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की।

सप्त दिवसीय ब्रज - साँझी महोत्सव के अवसर पर उपस्थित साँझी प्रेमी विदेशी जन।

द्वितीय सत्र में प्रशिक्षणार्थियों द्वारा भट्टजी की हवेली में बनने वाली सांझी की कलागत विशषताओं के संदर्भ में

सांझी प्रदर्शनी कक्ष में परंपरा विषयक जानकारी प्राप्त विद्यार्थीगण।

स्थलीय परिभ्रमण किया गया। संस्थान के निदेशक अजय कुमार पांडेय ने सभी अतिथियों का उत्तरीय उढ़ाकर अभिनंदन करते हुए कहा ब्रज की कला परंपराओं के संरक्षण की दिशा में वृंदावन शोध संस्थान सतत प्रयत्नशील है। हमारा उद्देश्य है कि अधिक से अधिक लोग संस्कृति की सेवा हेतु आगे आये। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ महामंत्र संकीर्तन से हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ.राजेश शर्मा ने किया। कार्यक्रम के समापन पर सांझी देवी का पूजन आगंतुक महानुभावों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम में यूक्रेन, उजबेकिस्तान, रशिया, कजाकिस्तान, जर्मनी, बेलारस, फ्रांस, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, अमेरिका एवं दक्षिण अफ्रीका आदि के प्रतिभागी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंतर्गत शासी परिषद सदस्य पं.उदयन शर्मा, सुशीला गुप्ता, पद्मश्री कृष्णा चित्रकार, विष्णुदान शर्मा, दूरदर्शन प्रभारी सत्यव्रत सिंह, इन्द्रद्युम्न स्वामी, विष्णुतत्वदास, अभिनव गोस्वामी, अंजलि गुप्ता, शिल्पीरानी, प्रीति सिकरवार, राधिका, रेखा, वर्तिका, नवनीत शर्मा, यशवंत, प्रज्ञा शर्मा, आचार्य सुमित गोस्वामी के निर्देशन में चल रही कार्यशाला में शिल्पिरानी, प्रीति सिकरवार, समृद्धि पाराशर, खुशबू चौधरी, आरती शर्मा, भूमि चौधरी, खुशबू अग्रवाल, डौली शर्मा, खुशबू शुक्ला, मृदानी गौतम, साधना खंडेलवाल, मयूरी अग्रवाल, प्रियंका गुर्जर, नैंसी निगम, खुशी साहू, अनामिका भारद्वाज, यशिका साहू, प्रिया शर्मा, रोहित शर्मा, मनीश राजपूत, धीरज साहू, अंजलि गुप्ता, राधिका, रेखा, वर्तिका, नवनीत शर्मा, यशवंत एवं प्रज्ञा शर्मा, मंजरीदासी, नरोत्तमदास, पद्मावलीदासी, मंजुलादासी, चंचल अक्षी, वृंदावनसुंदरी, ब्रजचंद्रिका, वृंदारानी, ऋषिकेश गंगा, कर्तामसी, धनिष्ठा, मनीकुंडला, ब्रजसुंदरी, श्यामाप्रेमी इन सबके अलावा हनुमान प्रसाद धानुका विद्यालय से पधारीं शिक्षिकायें एवं छात्रायें अंजलि गुप्ता, शिल्पीरानी, प्रीति सिकरवार, राधिका, रेखा, वर्तिका, नवनीत शर्मा, यशवंत, प्रज्ञा शर्मा आदि उपस्थित रहे।

सांझी प्रदर्शनी कक्ष में परंपरा विषयक जानकारी प्राप्त विद्यार्थीगण।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ

प्रदर्शनी

ब्रज संस्कृति संस्करण-2021

वृन्दावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पांच दिवसीय ब्रज संस्कृति संस्करण-2021 के अंतर्गत, संस्थान के प्रदर्शनी कक्ष में समसामयिक कला, कैलीग्राफी, चित्रकला, पिछवाई, सेवोपकरण एवं साँझी के खाके आदि सामग्री विभिन्न पैनलों पर प्रदर्शित की गई।

ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के अवसर पर
आयोजित प्रदर्शनी अवलोकन करते संस्कृति प्रेमी विज्ञजन

ब्रज संस्कृति संस्करण-2021 के अवसर पर
आयोजित प्रदर्शनी अवलोकन करते विद्यार्थीगण

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रदर्शनी – ब्रज संस्कृति संस्करण 2021

ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के अवसर पर
आयोजित प्रदर्शनी अवलोकन करते संस्कृति प्रेमी विज्ञजन

ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के अवसर पर प्रदर्शनी कक्ष में
पद्मश्री श्याम शर्मा तथा कार्यक्रम के अंर्तगत पधारे प्रतिभागीजन

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रदर्शनी – ब्रज संस्कृति संस्करण 2021

ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के अवसर पर प्रदर्शनी कक्ष में अवलोकन करते संघ प्रांत प्रचारक श्री हरीश रौतेला जी, आचार्य शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट एवं मधुकर चतुर्वेदी आदि।

ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के अवसर पर प्रदर्शनी कक्ष में अवलोकन करते नेशनल मॉडर्न आर्ट गैलरी, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के महानिदेशक श्रीअद्वैतगणनायक जी।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

प्रदर्शनी

शिक्षाष्टक की लिखित परंपरा

वृन्दावन शोध संस्थान एवं श्रीचैतन्य प्रेम संस्थान के सह-अनुष्ठान के रूप में श्रीचैतन्य महाप्रभु मुख निर्गत "शिक्षाष्टक" का आयोजन 30 सितम्बर 2021 को हुआ। इस दौरान शिक्षाष्टक का हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत भाषाओं में विभिन्न पैनलों पर प्रस्तुतिकरण करने के साथ ही संस्थान संग्रह की पांडुलिपियों के चित्र भी प्रदर्शित किये गये। इस अवसर पर सांसद महोदया श्रीमती हेमा मालिनी, उ.प्र.ब्रज तीर्थ विकास परिषद के उपाध्यक्ष शैलजाकांत मिश्र एवं आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी सहित अनेक जन उपस्थित रहे।

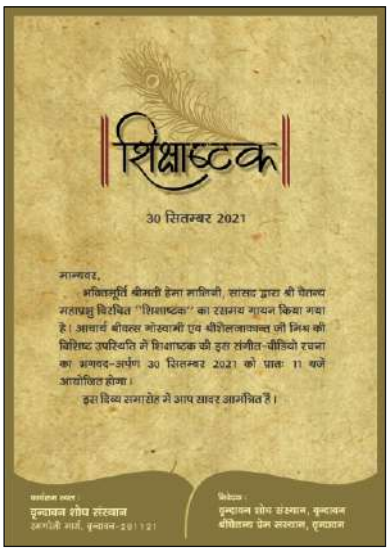

शिक्षाष्टक कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर श्रीचैतन्य महाप्रभु के चित्रपट पर माल्यार्पण करतीं सांसद श्रीमती हेमा मालिनी, साथ में उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के उपाध्यक्ष श्रीशैलजाकांत मिश्र एवं आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी जी।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रदर्शनी

शिक्षाष्टक की लिखित परंपरा

शिक्षाष्टक प्रदर्शनी के विभिन्न दृश्य –

संस्थान में आयोजित "शिक्षाष्टक" कार्यक्रम के दौरान श्रीचैतन्य महाप्रभु मुखवाणी के रूप में लोकविश्रुत आठ श्लोकों का हिंदी, अंग्रेजी, अनुवाद आठ पैनलों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

शिक्षाष्टक विषयक पांडुलिपि चित्र दीर्घा के समक्ष माननीय सांसद महोदया हेमा मालिनी जी, ब्रज तीर्थ विकास परिषद उ.प्र.के उपाध्यक्ष श्रीशैलजाकांत मिश्र एवं आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी जी एवं संस्थान सचिव प्रवीण गुप्ता।

शिक्षाष्टक विषयक पांडुलिपि चित्र दीर्घा के समक्ष माननीय सांसद महोदया हेमा मालिनी जी, ब्रज तीर्थ विकास परिषद उ.प्र.के उपाध्यक्ष श्रीशैलजाकांत मिश्र एवं आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी जी एवं अन्य।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

साँझी कार्यशाला

वृंदावन शोध संस्थान के द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय साँझी महोत्सव कार्यशाला के अंतर्गत विद्यार्थियों ने विभिन्न साँझी घरानों के कलाविदों से परंपरा की विविधताओं को जाना। श्रीराधारमण मंदिर के आचार्य एवं प्रसिद्ध कलाविद सुमित गोस्वामी तथा भट्टजी घराने के आचार्य शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट एवं विभुकृष्ण भट्टने साँझी रचना के विभिन्न चरणों की जानकारी दी। इस दौरान हनुमान प्रसाद धानुका, वेणु यूनिक जू.हा.स्कूल के 27 प्रतिभागियों सहित विभिन्न देशी-विदेशी संस्कृति प्रेमी विज्ञजनों ने सांझी की सूक्ष्मताओं को समझा। कार्यशाला में सम्मिलित प्रतिभागी विषय सम्मत व्याख्यानों से भी लाभान्वित हुए। उक्त सम्बन्धी विवरण व्याख्यान/परिचर्चा अध्याय में प्रस्तुत हैं।

ब्रज की साँझी कला प्रशिक्षण कार्यशाला के अवसर उपस्थित प्रतिभागी एवं संस्कृति प्रेमी विज्ञ जन।

ब्रज की साँझी कला कार्यशाला के अवसर प्रशिक्षण देते आचार्य विभुकृष्ण भट्ट एवं विद्यालयी छात्रायें।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

साँझी कार्यशाला

साँझी कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षण प्रदान करते श्रीराधारमण मंदिर (साँझी- घराना) के आचार्य सुमित गोस्वामी एवं भट्टजी घराने के आचार्य शैलेंद्रकृष्ण भट्ट।

संस्थान द्वारा आयोजित साँझी कार्यशाला के दौरान
प्रशिक्षण प्राप्त करते छात्रायें एवं संस्कृति प्रेमी विदेशी महिलायें

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

साँझी कार्यशाला

ब्रज की सांझी कला महोत्सव के अंतर्गत जल सांझी तैयार करते आचार्य सुमित गोस्वामी।

साँझी महोत्सव के अंतर्गत आचार्य सुमित गोस्वामी द्वारा तैयार जल सांझी का दृश्य।

साँझी कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षण प्रदान करते आचार्य सुमित गोस्वामी एवं प्रशिक्षणार्थी।

साँझी कार्यशाला के दौरान सांझी तैयार करते प्रशिक्षणार्थी।

प्रशिक्षण कार्यशाला– प्रतिभागी छात्रायें।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

वाह्य स्थल कार्यक्रम (आउटरीच प्रोग्राम)

सत्रान्तर्गत अनुभाग निम्नानुसार वाह्य स्थल कार्यक्रम (आउटरीच प्रोग्राम) किये गये-

- शास्त्र सेवा प्रकल्प के संयुक्त तत्वावधान में साँझी परम्परा के प्रसिद्ध भट्टजी घराने के सानिध्य में स्थानीय श्रीमदनमोहन मंदिर, भट्टजी की हवेली पर कार्यक्रम।
- उत्तर मध्य सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज एवं संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में श्रीरंग मंदिर, वृन्दावन तथा परिक्रमा मार्ग स्थित गोपाल घाट पर मणिपुर के कलाकारों द्वारा पुंगचोलम एवं ढोलचोलम नृत्य की प्रस्तुति।
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं दात्री फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वि-दिवसीय साँझी महोत्सव में संस्थान की ओर से सहभागिता।
- संस्थान की गतिविधियों, कार्य-उद्देश्य तथा संचालित प्रकल्पों के विषय में माननीय संस्कृति, भारत सरकार श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी को अवगत कराने तथा युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति परियोजनान्तर्गत आयोजन ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 में आमंत्रित करने के उद्देश्य से माननीय मंत्री जी के आवास पर विषय सम्मत परिचर्चा करते हुए संस्थार के ब्रोशर का लोकार्पण कराया गया।
- उक्त शृंखलान्तर्गत ब्रज सलिला पत्रिका हेतु लेख प्राप्ति, व्याख्यान एवं कार्यक्रमों सहभागिता हेतु लगभग 50 विज्ञजनों से सम्पर्क एवं वार्ता।

सत्रान्तर्गत संस्थान द्वारा 'शास्त्र सेवा' के संयुक्त तत्वावधान में साँझी परम्परा से प्रसिद्ध भट्ट जी घराने से जुड़े कलाविद-आचार्यों के सानिध्य में स्थानीय श्रीमदनमोहन मंदिर, वृन्दावन के प्रांगण में उपस्थितजनों ने साँझी परम्परा के कलागत सौन्दर्य की सूक्ष्मता और इसके साहित्य पक्ष को जाना। इस दौरान आचार्य जनार्दनकृष्ण भट्ट, माधवेन्द्र गोस्वामी, शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट एवं विभुकृष्ण भट्ट ने परम्परा से जुड़े सन्दर्भों के विषय में सविस्तार जानकारी दी। इस अवसरपर स्वामी इन्द्रद्युम्न जी महाराज सपरिकर उपस्थित रहे। साँझी अंकन की सूक्ष्मताओं को देख उपस्थित विदेशीजन अत्यधिक प्रभावित हुए।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

वाह्य स्थल कार्यक्रम (आउटरीच प्रोग्राम)

सांझी कला के लिए प्रसिद्ध वृंदावनस्थ भट्टजी की हवेली में संस्थान एवं शास्त्र सेवा प्रकल्प द्वारा आउटरीच कार्यक्रम के अंतर्गत सांझी अवलोकन का दृश्य।

सांझी कला के लिए प्रसिद्ध वृंदावनस्थ भट्टजी की हवेली में संस्थान एवं शास्त्र सेवा प्रकल्प द्वारा आउट रीच कार्यक्रम के अंतर्गत सांझी विचार गोष्ठी का दृश्य।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, प्रयागराज एवं वृन्दावन शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित मणिपुर लोकनृत्य पुंगचोलम एवं ढोलचोलम

वाह्य स्थल कार्यक्रम (आउटरीच प्रोग्राम)

रंगभरनी एकादशी पर सम्पूर्ण ब्रजमण्डल रंगों के उल्लास में डूबा हुआ है। कहीं रंग,कहीं गुलाल उड़ रहा है तो कहीं खेली जा रही है लट्ठमार होली। रंगभरनी एकादशी के पर्व पर दक्षिण भारतीय शैली के

दिव्यदेश श्रीरंगनाथ मंदिर में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र प्रयागराज, वृंदावन शोध संस्थान और श्रीरंगनाथ मंदिर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर से आये कलाकारों ने प्रसिद्ध पुंगचोलम और ढोलचोलम नृत्य का प्रस्तुत किया।

मंदिर परिसर स्थित बारहद्वारी के समीप आयोजित इस कार्यक्रम में मणिपुर के मणिपुरी कल्चरल ग्रुप के श्याम सिंह के नेतृत्व में कलाकारों ने अपनी अद्भुत प्रस्तुति से श्रद्धालुओं को अभिभूत कर दिया। कार्यक्रम में बन्द आखों से तलवार की धार पर नृत्य देख श्रद्धालु अचंभित हो गए। कार्यक्रम के अंत में मंदिर के रघुनाथ स्वामी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनघा श्रीनिवासन ने सभी कलाकारों को भगवान का प्रसादी दुपट्टा पहना कर स्वागत किया। इस अवसर पर नटवर,कान्हा , शरद शर्मा , राकेश दुवे, लखन लाल पाठक, जुगल किशोर, राम भजन, चौवी स्वामी , रंगा स्वामी विश्वास जी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

शोध - प्रकाशन गतिविधि : 2021-22

वाह्य स्थल कार्यक्रम (आउटरीच प्रोग्राम)

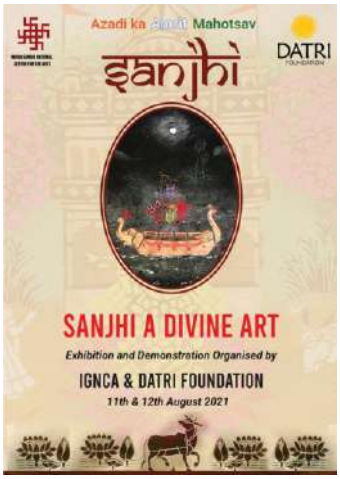

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के प्रकल्प IGNCA द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संस्थान की ओर से प्रतिनिधित्व हेतु साँझी कला विषयक व्याख्यान की तैयारी के क्रम में 73 विषय सम्मत चित्रों के संयोजन से 12 स्लाइडों तैयार कीं गई। जिनका प्रस्तुतिकरण IGNCA के सभागार में दिनांक 12 अगस्त 2021 को किया गया।

वृन्दावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के संदर्भ में माननीय संस्कृति मंत्री, भारत सरकार श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी को संस्थान आमंत्रित किये जाने हेतु उनके आवास पर जाकर संस्थान का परिचय देने के उपरांत, कार्यक्रम में उपस्थिति हेतु आमंत्रित किया गया।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

विशिष्टजन-संस्थान परिभ्रमण

सत्रान्तर्गत अनुभाग द्वारा निम्नानुसार 13 विशिष्टजन परिभ्रमण सम्पन्न हुए-

- **श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी** (माननीय संस्कृति मंत्री भारत सरकार)
- **श्रीमती हेमा मालिनी जी** (माननीय सांसद महोदया)
- **श्रीशैलजाकांत मिश्र जी** (उपाध्यक्ष, ब्रज तीर्थ विकास परिषद, उ.प्र.)
- **आदरणीया बेबीरानी मौर्य जी** (पूर्व राज्यपाल, उत्तराखंड)
- **श्रीहरीश रौतेला जी** (प्रान्त प्रचारक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ)
- **श्रीअद्वैत गणनायक जी** (महानिदेशक, नेशनल मार्डन आर्ट गैलरी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
- **श्रीरवीन्द्र सिंह जी** (पूर्व सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
- **श्रीअभिषेक नारंग जी** (उप-सचिव, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार)
- **प्रो. राजाराम शुक्ला जी** (पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानंद वि.वि. वाराणसी एवं वैदिक दर्शन विभागाध्यक्ष, काशी हिन्दू वि.वि. वाराणसी)
- **श्री जे.एल. श्रीवास्तव जी** (सिटी मजिस्ट्रेट, मथुरा)
- **प्रो॰ नीलिम्प त्रिपाठी जी** (प्रो.महर्षि योगी वैदिक वि.वि.)
- **श्रीमती अनघा श्रीनिवासन जी** (सी.ई.ओ. श्रीरंग मंदिर, वृन्दावन)
- **स्वामी इन्द्रद्युम्न जी** (इस्कॉन, वृन्दावन)

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

विशिष्टजन-संस्थान परिभ्रमण

संस्थान में संचालित शोध गतिविधियों, संग्रह विद्यमान पांडुलिपियों तथा प्रदर्शित कला वस्तुओं के अवलोकनार्थ विभिन्न अवसरों पर विशिष्टजनों को संस्थान आमंत्रित किया गया। तदनुसार विवरण दृष्टव्य है-

संस्थान परिभ्रमण के दौरान ग्रंथागार में अवलोकन करते माननीय संस्कृति मंत्री भारत सरकार श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी एवं अन्य।

संस्थान परिभ्रमण के दौरान ग्रंथागार में पुरा दस्तावेजों का अवलोकन करते माननीय संस्कृति मंत्री, भारत सरकार श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी, संस्थान अध्यक्ष श्री आर.डी. पालीवाल जी एवं अन्य।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

विशिष्टजन-संस्थान परिभ्रमण

संस्थान परिभ्रमण के दौरान ब्रज संस्कृति संग्रहालय में ब्रज लोक संस्कृति वीथिका का अवलोकन करते माननीय संस्कृति मंत्री,भारत सरकार, श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी, संस्थान अध्यक्ष श्री आर. डी.पालीवाल जी एवं अन्य।

संस्थान परिभ्रमण के क्रम में साँझी महोत्सव 2021 के अवसर पर प्रदर्शनी का अवलोकन करतीं सांसद श्रीमती हेमा मालिनी, उ.प्र.तीर्थ विकास परिषद के उपाध्यक्ष श्रीशैलजाकांत मिश्र, आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी एवं अन्य।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

विशिष्टजन-संस्थान परिभ्रमण

संस्थान के प्रदर्शनी कक्ष में सांझी विषयक संदर्भों का अवलोकन करतीं उत्तराखंड की पूर्व राज्यपाल आदरणीया बेबीरानी मौर्य जी एवं अन्य।

संस्थान के प्रदर्शनी कक्ष में सांझी विषयक संदर्भों का अवलोकन करतीं उत्तराखंड की पूर्व राज्यपाल आदरणीया बेबीरानी मौर्य जी एवं अन्य।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

विशिष्टजन-संस्थान परिभ्रमण

संस्थान परिभ्रमण के दौरान प्रदर्शनी कक्ष में जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के अवसर पर प्रदर्शित संदर्भों का अवलोकन करते संघ प्रांत प्रचारक श्री हरीश रौतेला जी एवं अन्य।

संस्थान परिभ्रमण के दौरान प्रदर्शनी कक्ष में जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के अवसर पर प्रदर्शित संदर्भों का अवलोकन करते नेशनल मॉडर्न आर्ट गैलरी, भारत सरकार के महानिदेशक श्रीअद्वैतगणनायक जी एवं अन्य।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

विशिष्टजन-संस्थान परिभ्रमण

संस्थान परिभ्रमण के दौरान हस्तलिखित ग्रंथागार में अवलोकन करते संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के पूर्व सचिव श्रीरवीन्द्र सिंह जी एवं संस्थान अध्यक्ष श्री आर.डी.पालीवाल जी।

संस्थान में संरक्षित पांडुलिपियों का अवलोकन करते संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के पूर्व सचिव श्रीरवीन्द्र सिंह जी एवं संस्थान अध्यक्ष श्री आर.डी.पालीवाल जी।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

विशिष्टजन-संस्थान परिभ्रमण

संस्थान परिभ्रमण के दौरान हस्तलिखित ग्रंथागार में अवलोकन करते संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के उप-सचिव श्रीअभिषेक नारंग जी, संस्थान अध्यक्ष श्री आर.डी.पालीवाल जी एवं अन्य।

संस्थान के हस्तलिखित ग्रंथागार में अवलोकन के दौरान सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि0वि0वाराणसी के पूर्व कुलपति एवं काशी हिन्दू वि0वि0वाराणसी के वैदिक दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो0राजाराम शुक्ला, सिटी मजिस्ट्रेट मथुरा श्री जे.एल. श्रीवास्तव एवं संस्थान सचिव प्रवीण गुप्ता।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

विशिष्टजन-संस्थान परिभ्रमण

संस्थान परिभ्रमण के क्रम में ब्रज की सांझी प्रदर्शनी का अवलोकन करते स्वामी श्रीइन्द्रद्युम्न जी महाराज एवं अन्य विदेशी जन।

संस्थान परिभ्रमण के क्रम में ब्रज की सांझी प्रदर्शनी का अवलोकन करते स्वामी श्रीइन्द्रद्युम्न जी महाराज एवं अन्य विदेशी जन।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में
7-11 दिसम्बर 2021 पर्यन्त आयोजित
पाँच दिवसीय ब्रज संस्कृति संस्करण

वृन्दावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में कला संस्कृति गोष्ठी शृंखला के अंतर्गत विभिन्न विषयों पर व्याख्यान/शोध परिचर्चा, विशिष्टजन संस्थान परिभ्रमण, प्रदर्शनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि मनोरथ सम्पन्न हुए। जिनका उल्लेख रिपोर्ट अंर्तगत वर्गीकृत रूप में किया गया है। उक्त क्रम में **विशिष्ट कला प्रदर्शन, श्रीकृष्ण कला शिविर एवं पारंपरिक कला प्रस्तुति** के अंतर्गत निम्नानुसार प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

वृंदावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और संदर्भ परियोजना के परिप्रेक्ष्य में आयोजित ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते माननीय संस्कृति मंत्री भारत सरकार, श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी, संस्थान अध्यक्ष आर०डी०पालीवाल, आचार्य शैलेंद्रकृष्ण भट्ट एवं संस्थान निदेशक डॉ० अजय कुमार पाण्डेय।

सत्र 2021-22 में युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ परियोजना के अंतर्गत वृन्दावन शोध संस्थान और जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में पाँच दिवसीय 'ब्रज संस्कृति संस्करण' (7 से 11 दिसम्बर 2021 पर्यन्त) श्रीकृष्ण संस्कृति से अभिप्रेत विविधताओं के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन संघ के ब्रज प्रांत प्रचारक श्रीहरीश रौतेला जी, सचिव प्रवीण गुप्ता, निदेशक डॉ० अजय कुमार पाण्डेय एवं जयपुर आर्ट समिट के संस्थापक अध्यक्ष आचार्य शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। इस दौरान श्री हरीश रौतेला जी ने कहा भगवान श्रीकृष्ण सभी कलाओं में परिपूर्ण हैं। उनके दर्शन के लिए ब्रज में सभी देवी-देवता किसी न किसी रूप में पधारे थे। वक्तव्य के दौरान उन्होंने ब्रज संस्कृति से जुड़े महत्त्वपूर्ण पक्षों पर सविस्तार विचार साझा किये। कार्यक्रम का समापन श्रीअर्जुनराम मेघवाल, माननीय संस्कृति

मंत्री, भारत सरकार के करकमलों से हुआ। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा ब्रज संस्कृति समस्त विश्व को प्रभावित कर रही है। भारत के महापुरूषों ने ब्रज संस्कृति से प्रभावित होकर ही समस्त विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार किया। इस दौरान श्री मेघवाल जी द्वारा संस्थान परिभ्रमण भी किया गया।

ब्रज संस्कृति संस्करण के अंतर्गत आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के संबंध में 5 दिसम्बर 2021, रविवार को पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया। पत्रकार वार्ता के दौरान जयपुर आर्ट समिट के अध्यक्ष डॉ॰ शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट एवं संस्थान निदेशक डॉ॰ अजय कुमार पाण्डेय ने कार्यक्रम अंतर्गत सम्पन्न होने वाली शैक्षिक गतिविधियों के संबंध में अवगत कराते हुए बताया कि आयोजन में ब्रज संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर विचार गोष्ठी का आयोजन भी किया जाएगा जिनमें विद्वतजन **ब्रज की विलुप्त होती सांझी कला, समाज गायन में रसोपासना का वर्तमान स्वरूप, ब्रज की लोक कलान कौ सेवा में विनियोग एवं प्रकृति में व्याप्त श्रीकृष्ण** आदि पक्षों पर विद्वानों के द्वारा विचार रखे जाने सम्बन्धी जानकारी दी गई। श्रीरंग मंदिर वृन्दावन की सी.ई.ओ. अनघा श्रीनिवासन जी ने कहा श्रीकृष्ण संस्कृति से जुड़ी विविधताओं से आज विश्व प्रभावित है। वृंदावन शोध संस्थान और जयपुर आर्ट समिट के द्वारा किये जा रहे इस आयोजन में देश के विभिन्न स्थानों के कलाविद सहभागिता कर रहे हैं। स्थानीय कला संस्कृति प्रेमी जन इस आयोजन में लाभान्वित होंगे, ऐसा विश्वास है। संस्थान के शासी परिषद सदस्य राधाकृष्ण पाठक एवं उदयन शर्मा ने बताया आयोजन के अन्तर्गत समसामयिक कला, कैलीग्राफी, चित्रकला, पिछवाई एवं सांझी के खाके आदि विषयों का प्रदर्शनी के अन्तर्गत प्रस्तुतिकरण किया जायेगा। कार्यक्रमों की शृंखला में विशिष्ट कला प्रदर्शन के अंतर्गत संस्कृत, देवनागरी कैलीग्राफी, नील कृष्णांकन, पंख चित्रांकन, सींकाकन, अग्नि कला, पुरा चित्र जीर्णोद्धार, अभिनय कला,

वृंदावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के अवसर पर उपस्थित संस्कृति प्रेमियों विज्ञजनों को संबोधित करते माननीय संस्कृति मंत्री भारत सरकार, श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी।

निकुंज शैली कला, सजीव चित्रांकन, रज शिल्पांकन और कॉफी चित्रांकन आदि परंपरायें कलाविदों के माध्यम से साझा होंगी। कार्यक्रम के दौरान दक्षिण भारतीय मंगल मांढना, नादस्वरम्, वाणी पद गायन, सितार एवं पखावज वादन, ढांढी-ढांढिन प्रस्तुति, भक्ति नृत्य, पुष्प स्थापना शैली, स्याम नृत्य, पंचतंत्री बेला वादन, रसिया गायन एवं पट्ट चित्र गायन आदि कार्यक्रमों की जानकारी भी वार्ता के दौरान दी गई।

ब्रज संस्कृति संस्करण के प्रथम दिवस मंगलवार को पांच दिवसीय कला एवं संस्कृति महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। इस दौरान हरिनाम संकीर्तन, वाणी पद गायन, पुष्पांजलि एवं नादस्वरम् आदि आयोजन हुए। युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ के परिप्रेक्ष्य में आयोजित महोत्सव अंतर्गत संघ के ब्रज प्रांत संयोजक हरीश रौतेला जी ने कहा भगवान श्रीकृष्ण सभी कलाओं में परिपूर्ण हैं। उनके दर्शन के लिए ब्रज में सभी देवी-देवता किसी न किसी रूप में पधारे थे। पद्मश्री श्यामसुन्दर शर्मा ने कहा ब्रज संस्कृति माधुर्य की संस्कृति है। ब्रजभूमि ने समूचे विश्व को प्रेम और माधुर्य का संदेश दिया है। कार्यक्रम के दौरान नेशनल मॉडर्न आर्ट गैलरी के महानिदेशक अद्वैत गणनायक, भारत पर्यावास केन्द्र की निदेशक अलका पाण्डे, कलाविद आर. बी.गौतम, संस्थान के सचिव प्रवीण गुप्ता आदि ने भी विचार रखे। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। संस्थान के निदेशक डॉ॰ अजय कुमार पाण्डेय ने कहा युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ के परिप्रेक्ष्य में आयोजित इस पांच दिवसीय कला संस्कृति महोत्सव से ब्रज संस्कृति के महत्वपूर्ण संदर्भ साझा होंगे। जयपुर आर्ट समिट के अध्यक्ष डॉ॰ शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट ने कहा इस पांच दिवसीय ब्रज संस्कृति संस्करण के माध्यम से संस्कृति के अध्ययन को नई दिशायें मिलेंगी। इस अवसर पर मदनगोपाल ब्रजवासी द्वारा पद गायन की प्रस्तुति दी गई। इनके साथ पखावज पर नटवर शर्मा एवं बांसुरी पर बलवंत सिंह ने संगत की। कन्हैया एवं कालिदास द्वारा नादस्वरम् प्रस्तुति दी गई।

द्वितीय दिवस बुधवार को विभिन्न कलाविदों ने अपनी कला के हुनर दिखाये। वहीं आयोजन के अन्तर्गत विद्वतजनों ने ब्रज की विलुप्त सांझी कला पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर पद्मश्री मोहनस्वरूप भाटिया ने अपने उद्बोधन में कहा सांझी कला ब्रज की महत्वपूर्ण परंपरा है। इसके विलुप्त होने के कारणों पर हमें गंभीरता पूर्वक विचार करना चाहिए। उन्होंने सांझी के कथानक एवं विविधताओं पर सविस्तार प्रकाश डाला। पद्मश्री श्याम शर्मा ने कहा ब्रज की कलायें श्रीकृष्ण का स्मरण कराती हैं, हमें भक्ति के समन्वय द्वारा इनसे जुड़ना चाहिए। डॉ॰ अमिता खरे ने कहा सांझी कला प्रभु की उपासना है। यह कला ब्रज की अनुपम धरोहर है। डॉ॰ सीमा मोरवाल ने कहा ब्रज लोक संस्कृति में सांझी के महत्व से अवगत कराया जाना चाहिए। आचार्य विष्णुमोहन नागार्च ने कहा सभी संस्कृति प्रेमी विज्ञजनों को सांझी के संरक्षण के लिए आगे आना चाहिए। आचार्य सुमित गोस्वामी ने मंदिर परंपरा में सांझी रचना की प्राचीन पद्धति तथा वर्तमान में इसके स्वरूप और संरक्षण की दिशा में विचार व्यक्त किये। डॉ॰ अलका पाण्डेय एवं कलाविद आर॰ बी॰ गौतम ने कहा ब्रज की कला परंपरायें श्रीकृष्ण का अनुभव कराने वाली है। हमें संस्कृति के संरक्षण एवं उन्नयन की दिशा में गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। आयोजन अंतर्गत अदिति अग्रवाल द्वारा पंख चित्रांकन की प्रस्तुति दी गई, वहीं अमिता चक्रवर्ती द्वारा सींकों के माध्यम से श्रीकृष्ण की छबि का कलात्मक चित्रण किया गया। ब्रजवल्लभ उदयवाल द्वारा नील के माध्यम से कपड़े पर श्रीकृष्णांकन किया। हरिशंकर वालोठिया द्वारा

संस्कृत कैलीग्राफी एवं अजीत कुमार द्वारा अग्नि कला के माध्यम से श्रीकृष्ण अंकन का प्रस्तुतिकरण किया गया। कार्यक्रम अंतर्गत डॉ॰ माधव भट्ट द्वारा रचित श्रीरघुनाथ भट्ट गोस्वामी और उनकी परंपरा शीर्षक ग्रंथ का लोकार्पण उपस्थित अतिथियों द्वारा किया गया। ग्रंथ की समीक्षा डॉ॰ भागवतकृष्ण नांगिया द्वारा की गई। इस दौरान दिलीप भट्ट, उनके सहयोगी सचिन भट्ट, शैलेन्द्र शर्मा एवं मथुरेश भट्ट द्वारा तमाशा शैली का सजीव प्रस्तुतिकरण किया गया। समापन पर वनस्थली, जयपुर से पधारे डॉ॰ अंकित भट्ट द्वारा सितार वादन किया गया।

तृतीय दिवस गुरूवार को पेन-पेंसिल चित्रांकन, पुरा चित्र जीर्णोद्धार, सजीव अभिनय प्रस्तुतिकरण, ग्रंथ लोकार्पण, एकल पखावज वादन और समाज गायन में रसोपासना का वर्तमान स्वरूप शीर्षक संगोष्ठी आदि कार्यक्रम संपन्न हुए। संगोष्ठी के दौरान आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी ने कहा उपास्य ही उपासना का मार्ग निर्धारित करता है। इष्ट पर ध्यान केन्द्रित करके संबंध बनाते हुए रिझाने की कोशिश करना ही साधना है। हृदय जब तक रस से पूर्ण नहीं होगा, रीझना और रिझाना दोनों ही संभव नहीं है। डॉ॰ वंदना तैलंग ने कहा वल्लभ संप्रदाय में अष्टयाम सेवा के अंतर्गत बाल भाव की सेवा है। नित्य सेवा में मंगला से शयन तक की सेवा के पदों का गायन किया जाता है। डॉ॰ चंद्रप्रकाश शर्मा द्वारा बताया गया कि ठाकुर सेवा तीन प्रकार से की जाती है- भोग, राग और श्रृंगार। समाज गायन राग सेवा के अंतर्गत आता है। मधुकर चतुर्वेदी ने कहा कि ब्रज में समाज गायन से पूर्व छंद गान और प्रबंध गान का प्रचलन था। पहले गायन में मृदंग द्वारा संगत की जाती थी लेकिन बाद में पखावज द्वारा संगत का प्रचलन समाज गायन में होने लगा। आचार्य वृंदावन बिहारी गोस्वामी ने कहा विभिन्न वैष्णव संप्रदायों की समाज गायन का स्वरूप लगभग मिलता-जुलता है लेकिन इसमें सूक्ष्म अंतर भी है। उन्होंने उक्त संदर्भ में सविस्तार प्रकाश डाला। कार्यक्रम अंतर्गत कला पर्यावरण के संबंध में डिंपल शाह और मुकेश सिंह द्वारा सजीव प्रस्तुतिकरण किया गया। प्रणय गोस्वामी द्वारा छीत स्वामी के प्रसिद्ध पद आगे गाय पाछै गाय... के आधार पर पेन/पेंसिल चित्रांकन, राम सिंह द्वारा श्रीगौर गदाधर के पुरा चित्र का सजीव जीर्णोद्धार प्रस्तुतिकरण किया गया। कार्यक्रम में डॉ॰ अमिता खरे द्वारा रचित पुस्तक कला सृजन के विविधवर्णी आयाम का लोकार्पण हुआ। पुस्तक की समीक्षा डॉ॰ राकेश पाठक द्वारा की गई। उन्होंने कहा चित्रकार, कलाकार और शिल्पकार समाज की महत्वपूर्ण कड़ी है। संस्थान के निदेशक डॉ॰ अजय कुमार पाण्डेय ने अतिथियों का स्वागत उत्तरीय उढ़ाकर किया गया। बुज्जो बाबू द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता के 18वें अध्याय अंतर्गत 66वें श्लोक सर्वधर्मानपरित्यज मामेकं शरणं व्रज... का कलात्मक प्रस्तुतिकरण किया गया। इन्दौर घराने के गो॰ दिव्येश कुमार द्वारा एकल पखावज वादन की प्रस्तुति दी गई, उनके साथ राजू पाठक ने ईसराज तथा ललित सिसोदिया द्वारा सारंगी पर संगत दी गई।

चतुर्थ दिवस शुक्रवार को निकुंज शैली चित्रांकन, कॉफी चित्रांकन, सजीव अभिनय प्रस्तुति, ग्रंथ लोकार्पण, ढांढी-ढांढिन नृत्य, पंचतंत्री वेला वादन और ब्रज की लोक कलान कौ सेवा में विनियोग शीर्षक संगोष्ठी आदि कार्यक्रम संपन्न हुए। कलाओं का सेवा में विनियोग संगोष्ठी के दौरान आचार्य श्रीहित सुकृतलाल गोस्वामी ने कहा कि साधकों ने रितुचर्या को ध्यान में रखते हुए उत्सवों और सेवा का निर्धारण किया। पद्मश्री श्याम शर्मा ने कहा सभी संप्रदायों ने समस्त ललित कलाओं का सेवा क्रम में विनियोग किया है। आचार्य

वृंदावन बिहारी ने कहा कृष्ण स्वयं ही कला स्वरूप है। उनके रूप अनंत है, अत: कलायें भी अनंत हैं। मैत्री गोस्वामी ने कहा पुष्टि संप्रदाय में भोग, राग और श्रृंगार सेवा के अंतर्गत समस्त कलाओं को सेवा से जोड़ा गया है। उन्होंने उत्सव परंपरा में कलाओं के संदर्भ में सविस्तार प्रकाश डाला। अतिथियों का स्वागत संस्थान के निदेशक डॉ॰ अजय कुमार पांडेय द्वारा पटुका उढाकर किया गया। कार्यक्रम अंतर्गत इंदर सलीम द्वारा अभिनय कला की सजीव प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम के दौरान कॉफी चित्रांकन निधि भारती द्वारा, शालिनी गोस्वामी द्वारा निकुंज शैली चित्रांकन, प्रिया बुज्जी बाबू दोंगा द्वारा गुजराती कैलीग्राफी के माध्यम से नृत्यति वेदांत सिद्धांतम् ... का चित्रण, मैत्री गोस्वामी द्वारा पारंपरिक आरती थाली सज्जा, राहुल सिंह द्वारा आंध्र प्रदेश की लोक कला में राधा-कृष्ण व्याप्ति, सरिता पांडेय द्वारा उत्तराखंड की लोक कला ऐपण के माध्यम से कृष्ण चित्रांकन, पारस गुप्ता द्वारा गॉड इज क्रिएटिड मैन, आकांक्षा पांडेय द्वारा वंशी वादन, गुलशन कुशवाह द्वारा कृष्ण का विश्व शांति संदेश, आशीष शर्मा द्वारा कालिय के फन पर नाचत वनमाली है। दुष्यन्त कुशवाह द्वारा नाग लीला के माध्यम से कोरोना की समाप्ति, अंकित प्रजापति द्वारा पेपर मैसी के माध्यम से कृष्ण, खुशबू सिंह द्वारा रास कर बैठे दो गलबहियां, प्रतिमा श्रीवास्तव द्वारा नौका विहार, नंदिनी मित्तल द्वारा देख सुदामा की दीन दशा..., अनुश्री तिवारी द्वारा प्रकृति में श्रीकृष्ण व्याप्ति, हर्षित परिहार द्वारा भ्रमर गीत एवं प्रीति प्रजापति द्वारा वेणु वादन का चित्रांकन किया गया। कार्यक्रम अंतर्गत ढांढी-ढांढिन नृत्य शैली का प्रदर्शन गोपाल सखी एवं भानु गोप द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जर्मन लेखिका फी तारा की पुस्तक द रेड थ्रेड (लाल धागा) का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन रविशंकर भट्ट द्वारा पंचतंत्री वेला वादन से हुआ।

अंतिम दिन शनिवार को समापन समारोह का शुभारंभ संस्कृति राज्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल द्वारा दीप प्रज्ज्वलन द्वारा किया गया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा ब्रज संस्कृति समस्त विश्व को प्रभावित कर रही है। भारत के महापुरूषों ने ब्रज संस्कृति से प्रभावित होकर ही समस्त विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार किया। ढांढी-ढांढिन द्वारा श्रीकृष्ण जनम बधाई गान प्रस्तुति गोपाल सखी एवं भानु गोप द्वारा की गई जिसमें पद गान मदनगोपाल एवं पखावज संगत मधुकर चतुर्वेदी द्वारा की गई। इस दौरान गीता सार प्रस्तुति एवं पुष्पांजलि विदेशी भक्तों द्वारा की गई। मंत्री महोदय ने संस्थान में कला प्रदर्शनी, हस्तलिखित ग्रन्थागार एवं ब्रज संग्रहालय का अवलोकन किया। अतिथियों का स्वागत संस्थान निदेशक डॉ॰ अजय कुमार पाण्डेय द्वारा पुष्प गुच्छ देकर एवं पटुका उढ़ाकर किया गया। कला शिविर के दौरान हंसराज चित्रभूमि द्वारा रज शिल्पांकन के माध्यम से, जर्मन कलाकार फी तारा का मृण्यशिल्प एवं यमुना जी प्रतिमा तैयार की गई। कोलकाता से आये कलाकार मंटू और जावा ने पट्ट चित्र गायन के माध्यम से भाव प्रदर्शित किये। कार्यक्रम के अंतर्गत तैयार किये गये चित्रांकनों को प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम के दौरान डॉ॰ कृष्णा महावर की पुस्तक भारतीय पश्चिमी संस्थापन कला एवं डॉ॰ श्यामविहारी अग्रवाल की पुस्तक भारतीय चित्रकला काव्य एवं संगीत का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। पुस्तकों की समीक्षा डॉ॰ अमिता खरे द्वारा की गई। आयोजन अंतर्गत प्रकृति में व्याप्त श्रीकृष्ण संगोष्ठी में संस्थान अध्यक्ष आर॰ डी॰ पालीवाल, पद्मश्री श्याम शर्मा, डॉ॰ इन्दु राव, आचार्य जनार्दन भट्ट, डॉ॰ ब्रजभूषण चतुर्वेदी एवं डॉ॰ राजेश शर्मा द्वारा विचार व्यक्त किये गये। कार्यक्रम का समापन डॉ॰ सीमा मोरवाल एवं उनके साथियों द्वारा रसिया गायन से हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ॰ माधवेंद्र भट्ट द्वारा किया गया।

इस अवसर पर अनघा श्रीनिवासन, इंद्रद्युम्न स्वामी, पं.उदयन शर्मा, नीलमणि गोस्वामी, जनार्दनकृष्ण भट्ट, डॉ॰ अमिता खरे, आचार्य विभुकृष्ण भट्ट, पं॰बिहारीलाल वशिष्ठ, डॉ॰चंद्रप्रकाश शर्मा, नीलमणि भट्ट, जनार्दन गोस्वामी, प्रणय गोस्वामी, मालव गोस्वामी, निधि गोस्वामी, डॉ॰ अमिता खरे, डॉ॰ अम्बालाल दमामी, डॉ॰विम्मी मनोज, डिंपल शाह, ईश्वरचंद्र रावत, संतोष अग्रवाल, विद्या उदयवाल, अनीता चक्रवर्ती, सुमित्रा अहलावत, दुष्यन्त कुशवाह, राम सिंह, आराधना गुप्ता, आशीष सिंह, अनामिका कुंदवाल, रसिकानन्द, कमलेश्वर शर्मा, कन्हैयालाल सरदार, शरद भारद्वाज, अजीत कुमार, अनामिका कुंदवाल, दुष्यन्त कुमार, रसिकानन्द मालव गोस्वामी, नवनीत शर्मा, डिंपल शाह, विष्णुतत्वदास एवं पारस गुप्ता सहित अनेक जन उपस्थित रहे। उपरोक्त क्रम में विशिष्ट कला प्रदर्शन, श्रीकृष्ण कला शिविर एवं पारंपरिक कला प्रस्तुति आदि के विवरण निम्नानुसार दृष्टव्य है–

विशिष्ट कला प्रदर्शन—

आयोजन के अंर्तगत विशिष्ट कला प्रदर्शन के क्रम में सुदूर क्षेत्रों से आये कलाविदों ने अपनी कला के हुनर दिखाये। श्रीकृष्ण संस्कृति की विविधताओं को दर्शाने वाले उन प्रदर्शनों के प्रति लोगों का कौतूहल तथा जिज्ञासा देखते ही बनते थे। कलाविद एवं उनकी प्रस्तुतियों के संदर्भ में विवरण प्रस्तुत है–

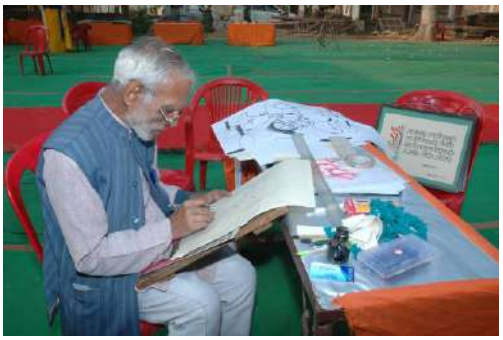

संस्कृत कैलीग्राफी - हरिशंकर भदौरिया

अभिनय कला - डिंपल शाह

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

सीकांकन – अमिता चक्रवर्ती

पंख चित्रांकन – अदिति अग्रवाल

नील कृष्णांकन – ब्रजवल्लभ उदयवाल

अग्नि कला – अजीत कुमार

पेंन/पेंसिल चित्रांकन
प्रणय गोस्वामी

देवनागरी कैलिग्राफी
बुज्जो बाबू एवं सहयोगी

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

पुरा चित्र जीर्णोद्धार- राम सिंह (सीनियर आर्टिस्ट)

अभिनय कला- मुकेश सिंह

निकुंज शैली कला - शालिनी गोस्वामी

कॉफी चित्रांकन - निधि भारती

अभिनय कला – इन्दर सलीम

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

श्रीकृष्ण कला शिविर—

पारस गुप्ता, ग्वालियर

विम्मी मनोज, भोपाल

सुमित्रा अहलावत, दिल्ली

हर्षित परिहार, ग्वालियर

खुशबू सिंह, ग्वालियर

शरद भारद्वाज, उदयपुर

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

श्रीकृष्ण कला शिविर—

दुष्यंत सिंह कुशवाह, ग्वालियर

आशीष कुमार सिंह, दिल्ली

राहुल सिंह, ग्वालियर

रसिकानन्द प्रभु, रशियन कलाकार

सरिता पाण्डेय, ग्वालियर

जर्मन आर्टिस्ट फी एवं अन्य कलाकार

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

श्रीकृष्ण कला शिविर—

प्रीति प्रजापति, ग्वालियर

गुलशन कुशवाह, ग्वालियर

आकांक्षा पाण्डेय, ग्वालियर

अनुश्री तिवारी, ग्वालियर

प्रतिमा श्रीवास्तव, ग्वालियर

अम्मालाल दमामी एवं
भागवतकृष्ण नांगिया

मंच पर विद्यमान
श्रीअशोक राय, श्रीविष्णुमोहन
नागार्च एवं राम सिंह

पार्थ सारथी पाल द्वारा तैयार श्रीकृष्ण के चित्र का
अवलोकन करते माननीय केन्द्रीय संस्कृति मंत्री

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

श्रीकृष्ण कला शिविर—

श्रीकृष्ण कला शिविर के अंतर्गत
ग्वालियर से पधारे प्रतिभागियों का दल

श्रीकृष्ण कला क्विविर के अंतर्गत
प्रतिभागियों द्वारा तैयार पेंटिग्स

श्रीकृष्ण कला शिविर के अंतर्गत प्रतिभागियों द्वारा तैयार पेंटिग्स का अवलोकन करते माननीय केन्द्रीय संस्कृति मंत्री श्रीअर्जुनराम मेघवाल जी।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

श्रीकृष्ण कला शिविर—

आशी शर्मा, ग्वालियर

दीपा साहू, ग्वालियर

नन्दिनी मित्तल, ग्वालियर

अंकित प्रजापति, ग्वालियर

किरण चौपड़ा, दिल्ली, नेक्शनल माडर्न आर्ट गैलरी के महानिदेक्शक अद्वैत गणनायक एवं झौलेन्द्रकृ ण भट्ट आदि

पांच दिवसीय सेमीनार में अपना व्यक्तव्य देते श्रीराकेश पाठक

केंद्रीय संस्कृति मंत्री अर्जुनराम मेघवाल जी एवं इन्द्रद्युम्न स्वामी जी।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

पारंपरिक कला प्रस्तुति—

मंगल-मांढना

तेलुकूट्टु श्रीनिवास राव एवं शुभम

नादस्वरम-थाविल :

कालिदास कन्नापन एवं कन्हैया यादव

वाणी पदन गायन -

मदनगोपाल ब्रजवासी एवं सहयोगीजन

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

पारंपरिक कला प्रस्तुति—

रज शिल्पांकन – हंसराज चित्रभूमि एवं अन्य

तमाशा शैली प्रस्तुतिकरण – श्रीदिलीप भट्ट एवं सहयोगी

सितार वादन – डॉ॰ अंकित भट्ट एवं सहयोगी

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

पारंपरिक कला प्रस्तुति—

ढांढी-ढांढिन नृत्य प्रस्तुतिकरण - निशांत एवं सहयोगी

पखावज वादन -
गो॰ दिव्येश कुमार जी महाराज, इन्दौर घराना एवं सहयोगी

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

पारंपरिक कला प्रस्तुति—

पंचतंत्री वेला वादन – रविशंकर भट्ट एवं सहयोगी

रसिया गायन – डॉ. सीमा मोरवाल एवं सहयोगी

पट्ट चित्र गायन– मंटू – जावा

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

वृन्दावन शोध संस्थान एवं 'शास्त्र सेवा प्रकल्प' के संयुक्त तत्वावधान में युग-युगीन श्रीकृष्ण : व्याप्ति और सन्दर्भ परियोजना अंतर्गत श्रीकृष्ण संस्कृति प्रेमी विदेशी साधकों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम निम्नानुसार सम्पन्न हुए-

- गोपी डॉट्स ।श्याम नृत्य
- पुष्पांजलि ।भगवतगीता थियेटर
- कालियदमन प्रस्तुति ।रास नृत्य

युग-युगीन श्रीकृष्ण व्याप्ति और संदर्भ परियोजनान्तर्गत संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में 'शास्त्र सेवा' प्रकल्प द्वारा आयोजित कार्यक्रम श्रृंखला के अर्न्तगत संस्थान के मुख्य द्वार पर उपस्थित विदेशी जन।

वृन्दावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ब्रज संस्कृति संस्करण समारोह-2021, में विदेशी कृष्ण भक्तों की प्रस्तुति देख लोग अभिभूत हुए। कार्यक्रम के दौरान देश-विदेश की विभिन्न संस्कृतियों वाले कलाविदों ने ब्रज के कृष्ण को मध्य में रखते हुए अपनी-अपनी कलाओं से श्रीकृष्ण को केन्द्रित कर अपनी अद्भुत कलाओं का परिचय दिया। जब विषय कला व कृष्ण का हो तो यह कहना उचित ही होगा कि संसार की हर कला कृष्ण में समाहित और उन्हीं की सेवा के लिए प्रगट है और इन्हीं शब्दों को प्रत्यक्षता में परिवर्तित करने वाला कार्य इस कार्यक्रम में देखने को मिला। परम पूज्य इन्द्रद्युम्न स्वामी जी (पू.गुरूदेव) के द्वारा संचालित प्रकल्प "शास्त्र सेवा" के द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम व कलाओं का प्रदर्शन देखते ही बनता था। लगभग 12 विविध देशों से आए विदेशी कलाकारों ने अपनी कला प्रस्तुति से इस कार्यक्रम को एक अपूर्व रूप प्रदान किया। पू.गुरूदेव जहाँ पोलेंड, वुडस्टोक, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया आदि अनेक देश विदेशों में कृष्ण एवं ब्रज संस्कृति का लगभग 50 वर्षों से प्रचार-प्रसार में अनवरत संलग्न हैं। वहीं आपके निर्देशन में ब्रज संस्कृति संस्करण को सफल बनाने के निमित्त कला, प्रस्तुतियों द्वारा वंदनीय कार्य किया गया।

शास्त्र सेवा प्रकल्प द्वारा प्रथम पुष्पांजलि नृत्य दर्शाया गया। जहां पू.गुरूदेव की शिष्या ब्रजसुन्दरी (श्यामा मण्डली दासी जी) ने भरतनाट्यम् नृत्य शैली में अपनी नृत्य कला का भावमय व मनोरम

युग-युगीन श्रीकृष्ण व्याप्ति और संदर्भ परियोजनान्तर्गत ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के दौरान शास्त्र सेवा प्रकल्प द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम में सहभागिता करने वाले प्रतिभागियों एवं अतिथियों के सत्कार के निमित्त गोपी डॉट्स का प्रस्तुतिकरण किया गया।

दृश्य उपस्थित किया। शास्त्रों में शुभ-कार्यों के प्रारम्भ में किया जाने वाला प्रथम कार्य स्वस्ति वंदना है। उसी स्वस्ति वंदना को संगीतमय ताल व पांव की थाप के अद्भुत समावेश से पुष्पांजलि अर्पित कर अपने नृत्य से ब्रजस्थ श्रीश्रीराधाकृष्ण एवं उपस्थित सभी विद्वतजन-कलाविद् इत्यादि दर्शकों का अभिनन्दन व स्वागत किया गया। श्यामा मण्डली जी एक परिपक्व नृत्य साधक है। जो बालपन से ही अपनी नृत्य गुरू अन्नापायनी दासी जी से नृत्य की विद्या ग्रहण कर रहीं हैं। वे भक्ति कलालयम नृत्य अकादमी की भी एक आदर्श छात्रा रहीं हैं। उन्होंने पाँच वर्ष की छोटी आयु से देश-विदेश में आयोजित कार्यक्रमों के मंच पर अपने नृत्य की अद्भुत कला का प्रदर्शन किया है।

युग-युगीन श्रीकृष्ण व्याप्ति और संदर्भ परियोजनान्तर्गत ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के दौरान पुष्पांजलि नृत्य की प्रस्तुति।

कार्यक्रम अन्तर्गत विदेशी भक्तों द्वारा नाम संकीर्तन नृत्य की प्रस्तुति

जिस प्रकार से शास्त्रों में निहित हर कला, अनुष्ठान, समारोह, यज्ञ आदि सभी शुभ कार्य की पूर्णता हरिनाम संकीर्तन के बिना करना असम्भव है। उसी का पालन करते हुए पू.गुरूदेव ने पंच दिवसीय यह कार्यक्रम प्रारम्भ करने से पूर्व नित्य प्रातः हरिनाम संकीर्तन से भौतिक व आध्यात्मिक परिदृश्य को अनुकूल बनाने का अपूर्व सफल प्रयास किया, श्रीमन् चैतन्य महाप्रभु जी द्वारा प्रदत्त श्रीप्रभु नाम 'हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामेव केवलम्' से शुभारंभ कर आयोजन को मंगलमय बनाया व वातावरण को हरिनाम की गूंज से पूरित किया। जहाँ उनका सहयोग पार्श्व गायिका 'प्रेमांजली जी' एवं खोल मृदंग पे करतामशी दास जी ने किया। कार्यक्रम के दूसरे दिन 'शास्त्र सेवा' प्रकल्प के नाटककारों ने एक रोमांचित व वीर रस से पूर्ण करने वाले एक नाटक का प्रस्तुतिकरण किया। जिसका शीर्षक 'कालिया कृष्ण' था। यह श्रीमद्भागवत में वर्णित कृष्ण द्वारा कलिया नाग को दमन करने का एक नाट्य रूपांतरण था। जिसमें ब्रजसुन्दर जी ने कृष्ण का पात्र निभाया एवं कालिया का पात्र यूक्रेन देश की प्रसिद्ध ऐरियल आर्टिस्ट द्वारा निभाया गया। माधवी लता जो कम आयु में ही बहुत प्रसिद्ध विदेशी ऐरियल कलाकार है। जिन्होंने इस कार्यक्रम में अपनी ऐरियल कला का अद्वितीय रूप प्रदर्शित इस नाटक में किया। जब यमुना को कालिया विषैला कर देता है, उस समय यमुना का पात्र निभाती हुई रशिया की नृत्यांगना 'हरिनाम चिंतामणि' जी द्वारा क्रंदन व रूदन एवं

कार्यक्रम अन्तर्गत विदेशी भक्तों द्वारा मृदंग वादन का दृश्य

युग-युगीन श्रीकृष्ण व्याप्ति और संदर्भ परियोजनान्तर्गत
ब्रज संस्कृति संस्करण में कालिदह प्रसंग का मंचन करते विदेशीजन

यमुना की असहाय पीड़ा की अभिव्यक्ति करतल ध्वनि की पात्र बनी। नाटक में कालिया नाग को जब अपनी गलती का आभास होता है तो वह श्रीकृष्ण से जो वचन कहता है, उसके अपूर्व रूप से दर्शन इस नाटक में दर्शकों की आंखों में अश्रु प्रकट कराने वाला था।

"वयं खलाः सहोत्पत्या तामसा दीर्घमन्यवाः।
स्वभावो दुस्त्यजो नाथ लोकानां यदसद्ग्रहः॥"

अर्थात् प्रभु हम जन्म से ही दुष्ट और तमोगुण स्वभाव के हैं, प्राणियों को अपने स्वभाव का त्याग करना अत्यंत कठिन है। प्रभु इस जगत की सृष्टि आपने की है। इस जगत में नागों की उत्पत्ति आपने की और आपने ही क्रोधी स्वभाव का बनाया है, इसमें मेरी क्या गलती है। श्रीकृष्ण द्वारा नागपत्नियों द्वारा क्षमा याचना करने पर क्षमा करते हुए कालिया का कल्याण दर्शाया गया।

जहाँ उपरोक्त श्लोक में तमोगुण की बात कही गई, वहीं कार्यक्रम के अंतिम दिन संस्कृति राज्यमंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने तमोगुण को विशेष रूप से वर्णित करते हुए कहा कि कला तम का नाश

युग-युगीन श्रीकृष्ण व्याप्ति और संदर्भ परियोजनान्तर्गत
ब्रज संस्कृति संस्करण में स्याम नृत्य का प्रस्तुतिकरण करते विदेशी कलाकार

युग-युगीन श्रीकृष्ण व्याप्ति और संदर्भ परियोजनान्तर्गत ब्रज संस्कृति संस्करण 2021 के दौरान श्रीमद्भगवद्गीता थियेटर कार्यक्रम में श्रीकृष्ण अर्जुन संवाद एवं राधा कृष्ण की मनोहारी झाँकी का परिदर्शन।

करने वाली है। आदरणीय मंत्री जी 'शास्त्र सेवा' प्रकल्प द्वारा प्रस्तुत सभी प्रस्तुतियों से अत्यंत प्रसन्नचित्त व प्रभावित थे। उन्हीं के सम्मुख एक बहुत सुन्दर 'श्याम नृत्य' का प्रस्तुतिकरण हुआ। पू.गुरूदेव द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित 'पोलेंड फेस्टिवल' का यह बहुप्रचलित नृत्य नाट्य है। जिसमें यह दिखाया गया कि माया के वश में माया जीव किस प्रकार भटकता रहता है, जो स्वभावत: हर जीव कृष्ण का एक दास है। चैतन्यचरितामृतकार श्रीकृष्णदास कविराज के अभिमत में "जीवेर स्वरूप होय नित्य कृष्णदास" कहा गया। उन्हीं वाक्यों को इस जीवन में किस प्रकार उतारा जाय और किस प्रकार जीव माया के बन्धनों से मुक्त होकर उन गोलोक विहारी श्रीश्रीराधाकृष्ण परिकर में अभिसार का पात्र बनता है, का अनुपम दर्शन कराया। इस नृत्य नाटिका में राधा कृष्ण का पात्र प्रसिद्ध नृत्यकार श्री जय जोशी जी एवं हरिनाम चिंतामणि जी ने निभाया एवं माया द्वारा भ्रमित जीव का पात्र ब्रज चंद्रिका जी ने निभाया। अष्टसखियों का परिकर चैतन्य भक्ति जी, सुरभि जी, स्याम मण्डली जी, रस मण्डली जी, माधवी लता जी, गोविंद रूपाणि जी, रसरानी प्रियाजी एवं मंगलावती जी ने निभाया। अंत में बंगला भाषा में कहा गया है - "**कृष्ण सूर्य समस्य माया हय अंधकार। जहाँ कृष्ण तहां नहीं मायार अधिकार॥**" को साकार रूप इस नृत्य नाटक ने करके दिखाया एवं करतल ध्वनि का पात्र बने।

देश-विदेश में भगवद्गीता का दुर्लभ ज्ञान पहुंचाने वाले प. पू.अभयचरणारविन्द भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद को जाता है, उन्हीं के शिष्य पू.गुरूदेव उसी ज्ञान को सरलतम प्रकार से मात्र कुछ क्षणों में नाट्य रूपांतरण कर महाभारत के प्रसंगों को निहित कर विदेशों में दर्शाते आए हैं। उसी भगवद्गीता थियेटर का प्रस्तुतिकरण इस कार्यक्रम में मन-लुभान्वित करने वाला रहा। कृष्ण का विश्वरूप का दृश्य इतना जागरूक था कि सभी बैठे दर्शकों की आँखों में आँसू भर आए व कभी बीच में हास्यास्पद दृश्य अति ही मनोरम व संतुलित करते हुए इतना बड़ा संदेश नाटक के माध्यम से कुछ क्षणों में दिखला गया। युग-युग में श्रीकृष्ण का अवतरण, माया द्वारा जीव को भ्रम में डालना, योग आदि परिस्थितियां, स्वधर्म परित्याग एवं कृष्ण समर्पण इस नाटक में दिखाया गया है। अर्जुन का पात्र करतामसी ने निभाया एवं कृष्ण का पात्र

भक्ति नृत्य

शचीप्राण जी ने निभाया एवं हरिनाम चिंतामणि, रसरानी प्रिया, विजय कीर्तन, गोरीदास कीर्तनियां, ऋषिकेश गंगा आदि सहायक रहे।

पूज्य गुरूदेव सदैव एक प्रकल्प लेकर अग्रण्य हैं Culturally many, Spritually one" सांस्कृतिक विविध परंतु आध्यात्मिक एक, यह प्रकल्प के चलते ही, भक्ति नृत्य का प्रस्तुतिकरण किया गया, जिसमें भारतवर्ष की अनेकानेक लोक एवं शास्त्रीय नृत्य व उनकी वेशभूषाओं को धारण करके नृत्य प्रस्तुत किया गया। जिसमें अनेकानेक देश-विदेश के नर्तक भारत की विभिन्न नृत्य शैली को कृष्णमयी रासलीला के रूप में दिखाते नजर आये। कृष्ण की रासलीला "Spritually one" होना एवं विदेशी भक्तों द्वारा भारतीय शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न शैलियां "Culturally many" का प्रकरण है।

साथ ही साथ अंत में मायापुर पश्चिम बंगालस्थ भक्तिवेदान्त गुरूकुल के छात्र, प.पू. प्रीतिवर्धन महाराज के दिशा-निर्देश में विशुद्ध बंगाल का पारंपरिक खोल मृदंग जुगलबन्दी व वादन करते हुए अंतिम दिन में समाप्त किया व आए हुए आदरणीय संस्कृति राज्यमंत्री जी का अभिवादन किया। जैसे कि अनेकानेक प्रकार की चित्र-कलाओं का प्रदर्शन भी हुआ वहीं विश्वप्रसिद्ध पू.गुरूदेव के शिष्य व चित्र कलाकार "रसिकानंद दास जी" द्वारा Best Painting का पुरस्कार व सम्मान उनकी बनायी हुई राधा-कृष्ण कुंज अभिसार लीला के लिए मिला। जिसमें उन्होंने पांच दिनों में ही वो चित्र को कार्यक्रम के चलते ही उसे पूर्ण किया, साथ ही साथ अखबारों में भी उनकी इस कला की झलकियां देखने को मिली।

अंत में व अपूर्वता को प्राप्त पू.गुरूदेव की शिष्याओं के द्वारा पत्रावली का आयोजन किया गया, जहां गोविंद लीलामृत आदि ग्रंथों के आधारपर वर्णित विविध पत्रावली व आधुनिक पाश्चात्य देश की भाषा में 'गोपी डॉट्स' सभी कलाकार व उपस्थित दर्शकों के मस्तक पर साज-सज्जा द्वारा अंकित किए गए। पू.गुरूदेव ने इसे "Signature of the programme" कहकर संबोधित करते हुए कहा कि ब्रजभूमि की संस्कृति व वृंदावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित यह ब्रज संस्कृति संस्करण में यह 'शास्त्र सेवा' की तरफ से उपहार स्वरूप है। कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने एवं शास्त्र सेवा प्रकल्प द्वारा प्रस्तुत इस आयोजन के निमित्त विवरण तैयार करने हेतु श्रीविष्णुतत्वदास जी के प्रति कृतज्ञ हैं।

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशन

अनुभाग द्वारा सत्रान्तर्गत निम्नानुसार 60 समाचार विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित कराये गये।

अनुक्रम

क्र. शीर्षक

01. शिक्षाष्टक के संगीत वीडियो का हेमा ने किया लोकार्पण - दैनिक जागरण 1 अक्टूबर 2021
02. शिक्षाष्टक गायन से मिली शांति : हेमा - हिन्दुस्तान 1 अक्टूबर 2021
03. नाम संकीर्तन का भाव चैतन्य महाप्रभु की देन - राष्ट्रीय खबर 1 अक्टूबर 2021
04. सांझी ब्रज की महत्वपूर्ण कला परम्परा - नेशनल एक्सेप्रेस 1 अक्टूबर 2021
05. वृन्दावन शोध संस्थान में शुरू हुआ सप्त दिवसीय सांझी महोत्सव - अमर उजाला 1 अक्टूबर 2021
06. नई पीढ़ी के मन में आए सांझी परंपरा के प्रति जागरूकता - राष्ट्रीय खबर 1 अक्टूबर 2021
07. सांसद ने किया सात दिवसीय सांझी महोत्सव का शुभारंभ - नवसत्ता 1 अक्टूबर 2021
08. ब्रज में राम की उपासना काफी प्राचीन : पद्मश्रीमोहनस्वरूप- अमर उजाला 7 अक्टूबर 2021
09. जन-जन के राम रामायण कॉन्क्लेव के दसवें संस्करण का शुभारंभ - नवसत्ता 7 अक्टूबर 2021
10. ब्रज में राम की उपासना काफी प्राचीन - भाटिया - स्वदेश 7 अक्टूबर 2021
11. तेरी नैया है जाय पार मनाय ले अवधबिहारी... - हिन्दुस्तान 7 अक्टूबर 2021
12. चित्र-विचित्र के प्रस्तुत भजन सुन भक्तिरस में डूबे श्रोता - नवसत्ता 8 अक्टूबर 2021
13. शोध संस्थान में आयोजित हुआ अंतर्राष्ट्रीय रामायण कॉन्क्लेव के दसवें संस्करण का शुभारंभ - नेशनल एक्सप्रेस 8 अक्टूबर 2021
14. कभी-कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े... - हिन्दुस्तान 8 अक्टूबर 2021
15. तेरी नैया है जाय पार मनाय ले अवधबिहारी... - अमर उजाला 8 अक्टूबर 2021
16. कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े - राष्ट्रीय पहल 8 अक्टूबर 2021
17. ब्रज संस्कृति का नालंदा है यह शोध संस्थान - दैनिक जागरण 24 अक्टूबर 2021
18. विविध कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न होगा स्थापना दिवस समारोह -नेशनल एक्सप्रेस 23 नवंबर 2021
19. वृन्दावन शोध संस्थान में सुरक्षित हैं 35 हजार पांडुलिपियां, स्थापना दिवस आज - अमर उजाला 24 नवंबर 2021
20. जीवात्मा स्वरूप की अनेक अवधारणाएं - शुक्ला - स्वदेश 25 नवंबर 2021
21. वृंदावन शोध संस्थान का 54वां स्थापना दिवस मनाया - अमर उजाला 25 नवंबर 2021
22. संस्कृति महोत्सव में ब्रज के महत्वपूर्ण संदर्भ साझा होंगे : अजय कुमार - नेशनल एक्सप्रेस 8 दिसंबर 2021
23. भगवान श्रीकृष्ण सभी कलाओं में परिपूर्ण - अमर उजाला 8 दिसंबर 2021
24. ब्रज माधुर्य की संस्कृति : श्यामसुंदर - हिन्दुस्तान 8 दिसंबर 2021
25. महोत्सव में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने रिझाया - दैनिक जागरण 8 दिसंबर 2021

क्र. शीर्षक

26. पांच दिवसीय कला एवं संस्कृति महोत्सव शुरू – यूनिक समय 7 दिसंबर 2021
27. ब्रज कलाओं की जन्मभूमि है और
वहां के मंदिर हमारी प्रेरणा के पुंज हैं – डॉ.हरीश जी – स्वदेश 8 दिसंबर 2021
28. कला एवं संस्कृति महोत्सव का हुआ शुभारम्भ – राष्ट्रीय पहल 8 दिसंबर 2021
29. ब्रज की महत्वपूर्ण परंपरा सांझी कला – स्वदेश 9 दिसंबर 2021
30. ब्रज की महत्वपूर्ण परंपरा सांझी कला : पद्मश्री मोहनस्वरूप – अमर उजाला 9 दिसंबर 2021
31. ब्रज की महत्वपूर्ण परंपरा सांझी कला : भाटिया – हिन्दुस्तान 9 दिसंबर 2021
32. सांझी कला
ब्रज की महत्वपूर्ण परंपरा है : मोहनस्वरूप भाटिया – नेशनल एक्सप्रेस 9 दिसंबर 2021
33. प्रभु की उपासना है ब्रज की सांझी कला – नवसत्ता 9 दिसंबर 2021
34. कला एवं संस्कृति महोत्सव में कलाविदों ने दिखाया हुनर – दैनिक जागरण 9 दिसंबर 2021
35. कलाविदों ने कला के हुनर दिखाए – यूनिक समय 8 दिसंबर 2021
36.उपास्य ही उपासना का मार्ग निर्धारित करता है : श्रीवत्स – दैनिक जागरण 10 दिसंबर 2021
37. उपास्य तय करें, उपासना कैसी हो : श्रीवत्स गोस्वामी –स्वदेश 10 दिसंबर 2021
38. उपास्य ही निर्धारित करता है उपासना का मार्ग –हिन्दुस्तान 10 अक्टूबर 2021
39. कला संस्कृति महोत्सव में हुए विविध कार्यक्रम – अमर उजाला 10 अक्टूबर 2021
40.कला एवं संस्कृति में कलाविदों ने दिखाया हुनर – राष्ट्रीय खबर 10 अक्टूबर 2021
41.उपास्य ही निर्धारित करता है उपासना का मार्ग – यूनिक समय 09 अक्टूबर 2021
42. कृष्ण स्वयं कला स्वरूप, कलाएं भी अनंत – हिन्दुस्तान 11 अक्टूबर 2021
43. स्वयं कला स्वरूप कृष्ण के रूप व कलाएं भी अनंत – स्वदेश 11 अक्टूबर 2021
44. कृष्ण स्वयं कला स्वरूप : आचार्य वृंदावन बिहारी – नेशनल एक्सप्रेस 11 अक्टूबर 2021
45. ढांढी-ढांढिन लीला देश कला साधक हुए मुग्ध – दैनिक जागरण 11 अक्टूबर 2021
46. श्रीकृष्ण स्वयं कला स्वरूप है – राष्ट्रीय पहल 11 अक्टूबर 2021
47. कृष्ण स्वयं कला स्वरूप है – यूनिक समय 10 अक्टूबर 2021
48. भारतीय संस्कृति को रोम-रोम में आत्मसात करें : मेघवाल – हिन्दुस्तान 12 अक्टूबर 2021
49. केंद्रीय मंत्री ने किया शोध संस्थान का निरीक्षण – अमर उजाला 12 अक्टूबर 2021
50. सतोगुण वाले लोगों को ही भाती है भारतीय संस्कृति – दैनिक जागरण12 अक्टूबर 2021
51. रामरतन धन की वास्तविक व्याख्या
मीरा ने ही की थी – अर्जुनराम मेघवाल – स्वदेश 12 अक्टूबर 2021
52. विश्व को प्रभावित कर रही है ब्रज संस्कृति – यूनिक समय 11 अक्टूबर 2021
53. ब्रज संस्कृति विश्व को प्रभावित कर रही : अर्जुनराम मेघवाल – नेशनल एक्सप्रेस 12 अक्टूबर 2021
54. ब्रज संस्कृति विश्व को प्रभावित कर रही है : अर्जुनराम मेघवाल – राष्ट्रीय पहल12 अक्टूबर 2021
55.ढांढी-ढांढिन लीला देख कला साधक हुए मुग्ध – राष्ट्रीय पहल 12 अक्टूबर 2021
56. संस्कृति राज्य मंत्री ने ब्रज संग्रहालय का किया अवलोकन – नवसत्ता 12 अक्टूबर 2021
57. रशिया छोड़ 'वृंदावन' में श्रीकृष्ण भक्ति के रंग भर रहे हैं 'रसिकानंद' – स्वदेश 15 अक्टूबर 2021
58. पुंग चोलम व ढोल चोलम से किया मंत्रमुग्ध – हिन्दुस्तान 15 मार्च 2022
59. रंगजी मंदिर में पुंग चोलम व ढोल चोलम नृत्य ने किया मुग्ध – दैनिक जागरण 15 मार्च 2022
60. रंगभरनी एकादशी पर रंगनाथ मंदिर में पुंग चोलम एवं
ढोल चोलम नृत्य का हुआ आयोजन – दि ग्राम टुडे 15 मार्च 2022

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

प्रेस की नजर से ...

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

अमर उजाला

वृंदावन शोध संस्थान में शुरू हुआ सप्त दिवसीय सांझी महोत्सव

सांसद हेमा मालिनी, आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी व शैलजाकांत मिश्र ने किया शुभारंभ

राष्ट्रीय खबर हमारी नजर

1:10:2021

नई पीढ़ी के मन में आए सांझी परंपरा के प्रति जागरूकता

वृंदावन से मुझे लगाव रहा है: सांसद हेमा

नवसत्ता

सांसद ने किया सात दिवसीय सांझी महोत्सव का शुभारंभ

संवाददाता

वृंदावन, 30 सितम्बर (नवसत्ता)। वृन्दावन शोध संस्थान में गुरुवार को सप्त दिवसीय सांझी महोत्सव- 2021 का शुभारम्भ सांसद हेमा मालिनी, आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी एवं उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के उपाध्यक्ष शैलजाकान्त मिश्र द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। इस दौरान 'ब्रज सांझी की सांस्कृतिक यात्रा' विषयक प्रदर्शनी तथा जल सांझी का परिदर्शन आगंतुक महानुभावों द्वारा किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी जी ने कहा सांझी ब्रज की महत्वपूर्ण कला परंपरा है। पितृ पक्ष के दौरान 16 दिनों तक होने वाले सांझी मनोरथ के अन्तर्गत साहित्य, संगीत और कला तीनों का समन्वय देखते ही बनता है। संस्थान के सचिव प्रवीण गुप्ता ने कहा संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले सांझी महोत्सव का उद्देश्य यही है कि ब्रज में आने वाले श्रद्धालुजन तथा संस्कृतिप्रेमी शोध अध्येता ब्रज संस्कृति की इस गौरवशाली परम्परा से साक्षात्कार कर सकें।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

अमर उजाला

ब्रज में राम की उपासना काफी प्राचीन: पद्मश्री मोहन स्वरूप

कार्यक्रम का दीप जलाकर शुभारंभ करते पद्मश्री मोहन स्वरूप भाटिया एव

वृंदावन। जिला प्रशासन व वृंदावन शोध संस्थान के सहयोग एवं अयोध्या शोध संस्थान के संयोजन में पर्यटन और संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा 'जन-जन के राम रामायण कान्क्लेव' के दसवें संस्करण का बुधवार को

गोरखपुर, विंध्यांचल एवं स्थानों पर इसका आयोज डॉ. अच्युतलाल भट्ट राम धर्म का स्वरूप है। गोस्वामी, आचार्य मृदु

नवसत्ता

संकल्प परिवर्तन का

www.navsatta.com

'जन-जन के राम रामायण कॉन्क्लेव' के दसवें संस्करण का शुभारंभ

संवाददाता

मथुरा, 06 अक्टूबर (नवसत्ता)। वृन्दावन शोध संस्थान के प्रेक्षागृह में जिला प्रशासन मथुरा एवं शोध संस्थान के सहयोग एवं संयोजन में

राम धर्म का स्वरूप है। 'रामो विग्रहवान धर्मः' अर्थात राम

स्वदेश

आगरा - मुख्य संस्करण

Date 7 Oct 2021

ब्रज में राम की उपासना काफी प्राचीन -भाटिया

वृंदावन में वीआरआई के प्रेक्षागृह में कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि एवं रामायण की प्रस्तुति देते छात्र-छात्रा

वृंदावन। पर्यटन एवं संस्कृति विभाग उप्र के संयुक्त तत्वावधान एवं अयोध्या शोध संस्थान के संयोजन में वृंदावन शोध संस्थान के प्रेक्षागृह में आयोजित जन-जन के राम रामायण कॉन्क्लेव के दसवें संस्करण का शुभारंभ बुधवार को हुआ।

संस्थान निदेशक लवकुश द्विवेदी ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्घाटन अयोध्या में राष्ट्रपति द्वारा 29 अगस्त को किया गया था। साथ ही चित्रकूट, बलिया, गोरखपुर, विंध्यांचल एवं श्रृंगवेरपुर आदि स्थानों पर इसका आयोजन हो जा चुका है। पद्मश्री मोहनस्वरूप भाटिया ने कहा कि ब्रज में राम की उपासना काफी प्राचीन है। ब्रज लोक में राम जन-जन में व्याप्त हैं। डा. अच्युतलाल भट्ट एवं आचार्य वृंदावनबिहारी गोस्वामी ने कहा कि वाल्मीकि के राम धर्म का स्वरूप और तुलसी के राम स्वयं परब्रह्म परमात्मा हैं। आचार्य मृदुलकांत शास्त्री ने कहा कि राम की यात्रा राम से श्रीराम बनने तक की है।

इससे पूर्व छात्र-छात्राओं ने लव-कुश के माध्यम से रामायण की भावमयी प्रस्तुति कर कर उपस्थितजनों को भावविभोर कर दिया। इस अवसर पर वृंदावन शोध संस्थान के निदेशक डा. अजय कुमार पांडेय, ललितमोहन शर्मा, उदयन शर्मा, भजन गायक जेएसआर.मधुकर, मृदुला पांडेय सीमा मोरवाल, वंदनाश्री, दीप शर्मा, राजेश प्रसाद शर्मा, वर्ति सिंह, अनिका गुप्ता, अजय कु सनातनदास, पंकज कुमार, शर्मा, दिवाकर शर्मा, गौरी विशाल कुमार, राधेश्याम, सैनी, मनोज कुमार, रजत ममता कुमारी, रेखारानी, पुरोहित, करुणेश कृष्णकुमार मिश्रा, करवें अशोक दीक्षित, ब्रजेश व शिवम आदि उपस्थित थे।

हिन्दुस्तान

तेरी नैया है जाय पार मनाय ले अवधबिहारी...

मनोहारी प्रस्तुतियां

- रामायण कॉन्क्लेव में छात्र के कलाकारों ने दी मनोहारी प्रस्तुतियां
- भजन, ओडिशी नृत्य एवं रामलीला का मंचन देख मंत्रमुग्ध हुए श्रोता

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

संकल्प परिवर्तन का

नवसत्ता

लखनऊ, शुक्रवार 08.10.2021

चित्र-विचित्र के प्रस्तुत भजन सुन भक्तिरस में डूबे श्रोता

नेशनल एक्सप्रेस

शोध संस्थान में आयोजित हुआ अंतर्राष्ट्रीय रामायण कॉन्क्लेव के दसवें संस्करण का शुभारंभ

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

www.livehindustan.com

अंतर्राष्ट्रीय रामायण कॉन्क्लेव में गीत, संगीत पर झूमे श्रोता

कभी-कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े...

आयोजन

अमर उजाला

तेरी नैया है जाये पार मनाय ले अवधबिहारी...

'जन जन के राम' रामायण कॉन्क्लेव में कार्यक्रम में कलाकारों ने दीं प्रस्तुतियां

आयोजित कार्यक्रम में मयूर नृत्य की प्रस्तुति देते कलाकार।

राष्ट्रीय पहल

हिन्दी दैनिक

कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

प्रेस की नजर से ...

54वाँ स्थापना दिवस समारोह

[24 नवंबर 2021]

वृन्दावन शोध संस्थान के 54वें स्थापना दिवस के अवसर पर 'ब्रज का नालंदा है वृन्दावन शोध संस्थान' शीर्षक आलेख दैनिक जागरण समाचार पत्र में प्रकाशित कराया गया, साथ ही अमर उजाला समाचार पत्र में भी उक्त विषयक आलेख प्रकाशित हुआ।

मथुरा, बुधवार 24 नवंबर, 2021

दैनिक जागरण

www.jagran.com

दवा के मनमाने दाम बने बड़ी बीमारी 15 | जम्मू-कश्मीर में पिछली सरकारों में पिछले दरवाजे से हुई ढाई लाख भर्तियां 17

ब्रज संस्कृति का नालंदा है यह शोध संस्थान

वृंदावन शोध संस्थान का 54वां स्थापना दिवस आज, शोध संस्थान में संरक्षित हैं तीस हजार पांडुलिपियां

वृंदावन: हजारों दुर्लभ ग्रंथ, सैकड़ों पांडुलिपि, लाखों कवित्त। वृंदावन शोध संस्थान यहां की संस्कृति और भक्ति परंपरा को समझने के लिए छोटा-सा नालंदा है। ऐसी जगह जहां ब्रज की परंपरा के ऐसे हजारों हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो अन्य कहीं देखने को भी नहीं मिल पाते हैं।

ग्रंथ प्रभु के विग्रह हैं। वृंदावन की रमणरेती स्थित वृंदावन शोध संस्थान की दीवार पर यही ध्येय वाक्य दर्ज है। दुर्लभ ग्रंथों के प्रति इस अनुराग ने इस जगह को पांडुलिपियों का भंडारगृह बना दिया है। आज यहां सैकड़ों छात्र ब्रज संस्कृति पर शोध करने आते हैं।

54 साल पूरे कर चुके संस्थान में भक्तिकाल की प्राचीन पांडुलिपियों के साथ दानपत्र, संकल्पपत्र, फरमानों का संरक्षण हो रहा है। ये नागरी, फारसी तथा बंगला लिपियों में हैं। करीब 30 हजार पांडुलिपियों में वैष्णव संप्रदाय गौड़ीय, निम्बार्क, वल्लभ, राधावल्लभ, हरिदासीय संप्रदाय के रचित साहित्य, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष विषयों की पोथियां हैं। यही नहीं, चैतन्य महाप्रभु की परंपरा के षड्गोस्वामियों से जुड़े दस्तावेज तथा पांडुलिपियों की श्रृंखला शोध के लिए संरक्षित है।

वृंदावन शोध संस्थान के ग्रंथागार में संरक्षित पांडुलिपियां • जागरण

वृंदावन शोध संस्थान के ग्रंथागार में संरक्षित जीव गोस्वामी की संकल्प-पत्री का फोटो, जो सन 1606 मदभर भट्ट के हस्तलेख में शामिल है • जागरण

वृंदावन शोध संस्थान में संरक्षित फारसी लिपि में फरमान की प्रतिलिपि • जागरण

शासी परिषद करती है संचालन

वृंदावन शोध संस्थान का संचालन सामान्य परिषद व शासी परिषद करती है। सामान्य परिषद में देशभर के अलग-अलग शहरों के सेवानिवृत्त अधिकारी, प्रोफेसरों, समाज में उल्लेखनीय योगदान देने वाले 74 लोगों को रखा जाता है। 19 सदस्यीय शासी परिषद में सात सदस्य केंद्र व प्रदेश सरकार के पदेन अधिकारी हैं। सात सदस्यों का चयन सामान्य परिषद द्वारा मतदान के आधार पर किया जाता है, एक डायरेक्टर और चार डायरेक्टर द्वारा नामित सदस्य शामिल हैं। अध्यक्ष व सचिव का चयन भी मतदान के जरिए तीन साल के लिए होता है। वर्तमान में संस्थान के अध्यक्ष आरडी पालीवाल, सचिव सुशीला गुप्ता और निदेशक के डा. अजय कुमार पांडे संभाल रहे हैं। संस्थान के संचालन के लिए अनुदान केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय एवं उप्र संस्कृति विभाग द्वारा की जाती है।

इन विषयों पर हो रहा शोध

- अमेरिकी हार्वर्ड विवि के शोधार्थी रावा श्री हेरमन हरिनामामृत व्याकरण के तुलनात्मक अध्ययन पर शोध कर रहे हैं।
- यूएसए के शिव चतुर्वेदी भागवत द्वितीय स्कंध, रसिकन प्रबोधन साख्या रूप गोस्वामी कृत विदग्ध माधव नाटक पर शोध कर रहे हैं।
- पोलैंड के एबीओ विवि फिनलैंड के शोधार्थी मैस श्री सम्मोहन तंत्र, नृसिंह परिचर्या, वैष्णव स्मृति, मूर्ति प्रमाण पर अपना शोध कर रहे हैं।
- मुंबई, प्रयागराज, दिल्ली, केरल, कोलकाता, काशी हिंदू विवि, बेल्लूर मठ, पंजाब विवि, एएमयू अलीगढ़, आइआइटी गुवाहाटी असम, धर्म प्रचार मंडल जम्मू आदि के 48 शोधार्थी यहां शोध कर रहे हैं।

पांडुलिपियां पुरानी हैं, करीब चार सौ साल पुरानी पांडुलिपियों को संरक्षित करना व डिजिटलाइजेशन और डिस्प्ले करने का इरादा है। भगवान श्रीकृष्ण और ब्रज पर आधारित फिल्मों के जरिए स्कूली बच्चों और पढ़े लोगों को भी जोड़ने का प्रयास करेंगे।

डा. अजय कुमार पांडे, निदेशक

इस तरह हुई शुरुआत

हाथरस में जन्मे डा. रामदास गुप्त लंदन के स्कूल आफ इंडियन एंड आफ्रीकन स्टडीज में प्रवक्ता थे। कलानिधियों के संग्रह, संरक्षण, शोध व प्रकाशन के लिए 24 नवंबर वर्ष 1968 में विहार पंचमी के दिन वृंदावन में उन्होंने शोध संस्थान की स्थापना की थी। केंद्रीय मंत्री डा. कर्ण सिंह ने इसका लोकार्पण किया था।

ये है दुर्लभ संग्रह

शोध संस्थान में वर्ष 1606 के दौरान लिखा गया जीव गोस्वामी का मूल संकल्प पत्र, श्रीमद्भागवत पिताम्बरी टीका, विभिन्न देशान्तरी अभिलेख, प्राचीन गौड़ीय ग्रंथागार का सूचीपत्र, विभिन्न वैष्णव संप्रदायों के तहत मुद्रण पूर्व विभिन्न कालक्रमों में सृजित पद संग्रह, ऐसे ग्रंथ और अभिलेख हैं, जो कहीं और नहीं मिलते हैं।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

अमर उजाला — आगरा, बुधवार, 24 नवंबर 2021

भरोसा | वित्तमंत्री सीतारमण ने कहा-डिफॉल्टरों से वापस दिलाएंगे बैंकों के पैसे...कारोबार | उत्तर प्रदेश

वृंदावन शोध संस्थान में सुरक्षित हैं 35 हजार पांडुलिपियां, स्थापना दिवस आज

1968 में स्कूल ऑफ इंडियन एंड अफ्रीकन स्टडीज लंदन यूनिवर्सिटी में हिंदी के प्रोफेसर डॉ. रामदास गुप्त ने की थी स्थापना

संवाद न्यूज एजेंसी

वृंदावन। वृंदावन शोध संस्थान बुधवार को 54 वां स्थापना दिवस मना रहा है। इसमें ब्रज साथ ही नागरी लिपि, उर्दू, बांग्ला, फारसी के अभिलेख के साथ तीस हजार से अधिक प्राचीन पांडुलिपियों का संग्रह है।

ब्रज की सांस्कृतिक विरासत को बचाने में वृंदावन शोध संस्थान बड़ा काम कर रहा है। इसकी स्थापना 1968 में विहार पंचमी को स्कूल ऑफ इंडियन एंड अफ्रीकन स्टडीज लंदन यूनिवर्सिटी में हिंदी के प्रोफेसर डॉ. रामदास गुप्त ने लोई बाजार स्थित हाथरस वाली धर्मशाला में की थी। बाद में शोध संस्थान को रमणरेती में शिफ्ट किया गया।

संस्थान का उद्देश्य प्राचीन पांडुलिपियों, पुरातत्व महत्व की वस्तुओं एवं ब्रज संस्कृति से संबंधित लोक पारंपरिक धरोहरों का संरक्षण करना है। वर्तमान में रमणरेती स्थित इस संस्थान का ग्रंथागार विशेष है। यहां वैष्णव संप्रदायों की पांडुलिपियां, बादशाह अ... सहित परवर्ती शासकों के फरमान, मध्यक... विभिन्न रियासतों के ब्रज के मंदिरों को दि... दान-पत्र, संकल्प-पत्र, उत्तराधिकार-प... प्राचीन याददाश्ती अभिलेख इस मौ... आयुर्वेद, ज्योतिष, पद-संग्रह, उर्दू एवं ... की पांडुलिपियां भी यहां हैं।

15 हजार मुद्रित पुस्तक, शब्दकोश एवं शोध ग्रंथ मौजूद

वृंदावन। संस्थान के संदर्भ पुस्तकालय में हिंदी, बंगला, उड़िया, गुरुमुखी, अंग्रेजी, उर्दू एवं फारसी आदि भाषाओं की 15 हजार मुद्रित पुस्तकों के साथ ही विभिन्न शब्दकोश एवं शोध ग्रंथ संगृहीत हैं। ब्रज संस्कृति से जुड़े विभिन्न विषयों पर 36 शोधपरक पुस्तकें और हिंदी, संस्कृत ग्रंथों के सूची पत्रों का प्रकाशन कराया जा चुका है। इनमें कई दुर्लभ पांडुलिपियों का संपादन भी है। ब्रज संस्कृति के ... सांस्कृतिक, सांगीतिक एवं कला-

वृंदावन शोध संस्थान ने बीते 54 वर्षों में ब्रज संस्कृति के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पक्षों पर विविधतापूर्ण कार्य करने के साथ ही भारतीय और विदेशी शोध अध्येताओं के लिये अध्ययन का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। ब्रज में आने वाले पर्यटकों के लिये भी ब्रज संस्कृति से साक्षात्कार कराने वाले अनेक पक्षों को अध्येताओं की सुविधार्थ ... है। -

दैनिक जागरण

दर्शन में अनेक अवधारणाएं : प्रो. राजाराम

स्वदेश — आगरा - मुख्य संस्करण, Date 25 Nov 2021

जीवात्मा स्वरूप की अनेक अवधारणाएं -शुक्ला

वृंदावन में वीआरआई पर स्थापना दिवस समारोह में व्याख्यान देते प्रो. राजाराम शुक्ला व अन्य मंचासीन अतिथि

वृंदावन। वृंदावन शोध संस्थान का 54वां स्थापना दिवस समारोह बुधवार को विविध कार्यक्रमों के मध्य मनाया गया।

डा. रामदास गुप्त स्मृति व्याख्यान में संपूर्णानन्द विवि के पूर्व कुलपति एवं काशी हिंदू विवि के वैदिक दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो. राजाराम शुक्ला ने कहा कि जीवात्मा के स्वरूप के संबंध में अनेक अवधारणाएं हैं। इसमें मुख्यतः अद्वैतवादी शंकराचार्य जीवात्मा को व्यापक मानते हैं जबकि माध्व संप्रदाय, वल्लभ एवं गौड़ीय में इसे अणु माना गया है। गौड़ीय संप्रदाय के उद्भट आचार्य जीव गोस्वामी ने अपनी सर्व संवादिनी टीका में अनेक युक्तियों एवं श्रुति प्रमाण के आधार पर जीवात्मा की अणुता सिद्ध की है। मुख्य अतिथि स्वामी महेशानंद सरस्वती ने कहा कि हमें ब्रज संस्कृति की सेवा में मनोयोग के साथ आगे बढ़ना चाहिए। आचार्य श्रीवत्स गोस्वामी ने कहा कि नई पीढ़ी को संस्कृति के साथ जोड़ने की दिशा में विभिन्न प्रयास होने चाहिए। डा. शैलेंद्रकृष्ण भट्ट ने कहा कि भक्ति ही जीव के उद्धार का एकमात्र साधन है। वहीं डा. विजया शर्मा के निर्देशन में श्रीकृष्ण लीला पर आधारित नृत्य शैली कृष्ण धारा की प्रस्तुति दी गई। उन्होंने श्रीनंदकुमार अष्टकम् सुंदरम् गोपालम् उर वनमालं..., बरसे रे बदरिया सावन की..., दीनबंधु दया करो..., खेलत अति सुख प्रीति प्रगट भई..., वृंदावन कुंज भवन नाचत गिरधारी... आदि पर मनोहारी प्रस्तुति दी। जिसमें उनका सहयोग प्रियंका पांडेल, जागृति गहलोत, निकिता कुशवाह, सपना मेवाड़ा एवं मौसमी दास ने किया। हारमोनियम एवं गायन पर जितेंद्र शर्मा व डा. राजकुमारी शर्मा, तबले पर उस्ताद नफीस खां, सितार पर अंबरीश गंगराडे व अंशुपायन सिन्हा ने संगत की।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी इन्द्रद्युम्न द्वारा हरिनाम संकीर्तन एवं अतिथियों द्वारा ठा. बांकेबिहारी के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। वहीं ब्रज गीता पुस्तक का विमोचन भी किया गया। संस्थान निदेशक डा. अजय कुमार पांडेय ने अतिथियों का पटुका ओढ़ाकर स्वागत किया। इस अवसर पर सचिव प्रवीण गुप्ता, बिहारीलाल वशिष्ठ, आचार्य विभुकृष्ण भट्ट, डा. कृष्णओम सिंह, डा. कृष्णमुरारी, ईश्वरचंद्र रावत, मोहनलाल गौतम मोही, डा. विनोद बनर्जी, शीतलादेवी दासी, डा. राजेंद्रकृष्ण अग्रवाल, ओमवती शर्मा, विशेष कार्याधिकारी सतीशचंद्र दीक्षित, सुशीला गुप्ता आदि उपस्थित थे।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

अमर उजाला

आगरा

उत्तर प्रदेश

नरवणे बोले-सीमा विवाद सूझबूझ से सुलझाना बांग्लादेश से सीखें पड़ोसी...14

चीन पर निशाना

वृंदावन शोध संस्थान का 54वां स्थापना दिवस मनाया

संवाद न्यूज एजेंसी

वृंदावन। वृंदावन शोध संस्थान में बुधवार को 54वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ... सम्पूर्णानंद विश्वविद्यालय के ... कुलपति एवं काशी ... विश्वविद्यालय वाराणसी के ... दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो. ... शुक्ला ने कहा कि जीव ... स्वरूप के संबंध में दर्शन ... अवधारणाएं हैं।

मुख्य अतिथि स्वा... सरस्वती ने कहा संस... सराहनीय हैं। हमें ... सेवा में मनोयोग ... बढ़ना चाहिए। ... गोस्वामी ने क... संस्कृति के स... विभिन्न प्रक... चाहिए। डॉ...

भी विचार रखे। इससे पूर्व कार्यक्रम ... स्वामी इन्द्रद्युम्न ... संकीर्तन से ...

नेशनल एक्सप्रेस

हर खबर समय पर

विविध कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न होगा स्थापना दिवस समारोह

वृन्दावन । वृन्दावन शोध संस्थान का 54वाँ स्थापना दिवस समारोह बुधवार को विविध कार्यक्रमों के साथ आयोजित होगा। इस विषय में जानकारी देते हुए संस्थान के निदेशक डॉ0अजय कुमार पाण्डेय ने सोमवार को बताया कि कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि0वि0वाराणसी के पूर्व कुलपति एवं काशी हिन्दू वि0वि0वाराणसी के वैदिक दर्शन विभागाध्यक्ष प्रो0राजाराम शुक्ला सायं 05 बजे ''जीव की अवधारणा'' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करेंगे। तदोपरान्त सायं 6 बजे से डॉ0विजया शर्मा, भोपाल द्वारा ''श्रीकृष्ण लीला पर आधारित कृष्ण धारा'' कार्यक्रम का प्रस्तुतिकरण किया जायेगा। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः श्रीगोपाल सहस्रनाम पाठ से होगा। संस्थान के निदेशक ने सभी संस्कृति प्रेमी विज्ञ जनों से कार्यक्रम में सहभागिता करने का अनुरोध किया है।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

8 Decber 2021

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

प्रेस की नजर से ...

8 Decber 2021

स्वदेश

आगरा - मुख्य संस्करण

Date 8 Dec 2021

पांच दिवसीय ब्रज संस्कृति संस्करण-2021 का शुभारंभ

ब्रजभूमि कलाओं की जन्मभूमि है और यहां के मंदिर हमारी प्रेरणा के पुंज हैं-डॉ. हरीश जी

वृंदावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिति द्वारा आयोजित ● देश के नामचीन कलाविदों की रही उपस्थिति

नादस्वरम् के स्वरों से हुआ शुभारंभ

इनकी रही उपस्थिति

ब्रज संस्कृति के अध्ययन को मिलेगी नई दिशा

राष्ट्रीय विचारधारा का एकमात्र समाचार पत्र

राष्ट्रीय पहल

ईदगाह की सीढ़ियों में मूर्ति ना निकले... 08 हिन्दी दैनिक सांसद ने लोकसभा में उठाई यमुना पर...

कला एवं संस्कृति महोत्सव का हुआ शुभारम्भ

राष्ट्रीय पहल संवाददाता

वृन्दावन :वृन्दावन शोध संस्थान एवं जयपुर आर्ट समिट के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को पांच दिवसीय कला एवं संस्कृति महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। इस दौरान हरिनाम संकीर्तन, वाणी पद गायन, पुष्पांजलि एवं नादस्वरम् आदि आयोजन हुए। युग-युगीन श्रीकृष्ण: व्याप्ति और सन्दर्भ के परिप्रेक्ष्य में आयोजित महोत्सव अंतर्गत संघ के ब्रज प्रांत संयोजक हरीष रौतेला जी ने कहा भगवान श्रीकृष्ण सभी कलाओं में परिपूर्ण हैं। उनके दर्शन के लिए ब्रज में सभी देवी-देवता किसी न किसी रूप में पधारे थे। पद्मश्री श्यामसुंदर शर्मा ने कहा ब्रज संस्कृति माधुर्य की संस्कृति है। ब्रजभूमि ने समूचे विश्व को प्रेम और माधुर्य का संदेश दिया है। कार्यक्रम के दौरान नेशनल मॉडर्न आर्ट गैलरी के महानिदेशक अद्वैत गणनायक, भारत पर्यावास केन्द्र की निदेशक अलका पाण्डे, कलाविद आर.बी.गौतम, संस्थान के सचिव प्रवीण गुप्ता आदि ने भी विचार रखे। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। संस्थान के निदेशक डॉ॰ अजय कुमार पाण्डेय ने कहा युग-युगीन श्रीकृष्ण: व्याप्ति और सन्दर्भ के परिप्रेक्ष्य में आयोजित इस पांच दिवसीय कला संस्कृति महोत्सव से ब्रज संस्कृति के महत्वपूर्ण

संदर्भ साझा होंगे। जयपुर आर्ट समिट के अध्यक्ष डॉ॰ शैलेन्द्रकृष्ण भट्ट ने कहा इस पांच दिवसीय ब्रज संस्कृति संस्करण के माध्यम से संस्कृति के अध्ययन को नई दिशायें मिलेंगी।

इस अवसर पर मदनगोपाल ब्रजवासी द्वारा पद गायन की प्रस्तुति दी गई। इनके साथ पखावज पर नटवर शर्मा एवं बांसुरी पर बलवंत सिंह ने संगत की। कन्हैया एवं कालिदास द्वारा नादस्वरम् प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के दौरान पं॰ बिहारीलाल वशिष्ठ, डॉ॰चंद्रप्रकाश शर्मा, नीलमणि भट्ट, जनार्दन गोस्वामी, प्रणव गोस्वामी, मालव गोस्वामी, निधि गोस्वामी, डॉ॰ अमिता खरे, डॉ॰ ए॰ एल॰ दमामी, डॉ॰बिम्मी मनोज, डिंपल शाह, ईश्वरचंद्र रावत, संतोश अग्रवाल, विद्या उदयवाल, अनीता चक्रवर्ती एवं आचार्य विभुकृष्ण भट्ट सहित अनेक जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ॰ माधवेंद्र भट्ट द्वारा किया गया।

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

9 Decmber 2021

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

10 Decmber 2021

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

11 Decmber 2021

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

12 Decmber 2021

शोध – प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021–22

प्रेस की नजर से ...

12 Decmber 2021

नेशनल एक्सप्रेस
हर खबर समय पर
ब्रज संस्कृति विश्व को प्रभावित कर रही: अर्जुनराम मेघवाल
कला प्रदर्शनी, हस्तलिखित ग्रन्थागार एवं ब्रज संग्रहालय का अवलोकन

राष्ट्रीय पहल
08 हिन्दी दैनिक
ढांढी-ढांढिन लीला देख कला साधक हुए मुग्ध

नवसत्ता
संस्कृति राज्य मंत्री ने ब्रज संग्रहालय का किया अवलोकन

राष्ट्रीय पहल
राष्ट्रीय विचारधारा का एकमात्र समाचार पत्र
08 हिन्दी दैनिक
ब्रज संस्कृति विश्व को प्रभावित कर रही है- अर्जुनराम मेघवाल

स्वदेश
आगरा - मुख्य संस्करण
Date 15 Dec 2021
रशिया छोड़ 'वृंदावन' में श्रीकृष्ण भक्ति के रंग भर रहे हैं 'रसिकानंद'
संकीर्तन की धुन पर बनाते हैं राधा-कृष्ण के मनोहारी चित्र

शोध - प्रकाशन अनुभाग गतिविधि : 2021-22

प्रेस की नजर से...

हिन्दुस्तान

भरोसा नए हिन्दुस्तान का

पुंग चोलम व ढोल चोलम से किया मंत्रमुग्ध

वृंदावन,हिन्दुस्तान संवाद। रंगभरनी एकादशी पर वृंदावन शोध संस्थान, संस्कृति मंत्रालय के प्रकल्प उत्तर मध्य सांस्कृतिक केंद्र प्रयागराज एवं श्रीरंग मंदिर के संयुक्त तत्वावधान में पुंग चोलम एवं ढोल चोलम नृत्य का मनोहारी प्रस्तुतिकरण किया गया। श्रीरंग मंदिर में आयोजित इस कार्यक्रम की विविधताओं को देख लोगों का उत्साह देखते ही बन रहा था।

मणिपुर कल्चरल ग्रुप के श्याम सिंह ने बताया यह मणिपुर का प्रसिद्ध नृत्य है। मांगलिक अवसरों पर इसका प्रस्तुतिकरण होता है। शोध संस्थान के शासी परिषद सदस्य उदयन शर्मा ने कहा कि होली ब्रजमंडल का प्रसिद्ध त्योहार है। श्रीरंग मंदिर की सीईओ अनघा श्रीनिवासन ने कहा कि रंगभरनी एकादशी के अवसर पर इस कार्यक्रम ...

मंगलवार को किड्स कॉर्नर में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर रंगारंग प्रस्तुति देती छात्राएं। • हिन्दुस्तान

भारतीय वैदिक संस्कृति का प्रेम पूर्ण त्योहार है होली

वृंदावन। छटीकरा रोड स्थित कपिल कुटीर सांख्य योग आश्रम में ... 17 वां त्रिदिवसीय पाटोत्सव एवं होली महोत्सव का आयोजन किया गया। ... दास ने कहा कि रंगभरनी ... ब्रज में रंगभरी ...

रंगभरनी एकादशी पर रंगनाथ मंदिर में पुंग चोलम एवं ढोल चोलम नृत्य का हुआ आयोजन

विभव भारद्वाज

दि ग्राम टुडे

मथुरा- रंगभरनी एकादशी पर वृन्दावन में होली का उल्लास उमड़ पड़ा है। दूरदराज से आने वाले श्रद्धालु होली महोत्सव का खूब आनन्द लेते देखे जा रहे हैं। इसी क्रम में वृन्दावन शोध संस्थान, संस्कृति मंत्रालय के प्रकल्प उत्तर मध्य सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज एवं श्रीरंग मंदिर के संयुक्त तत्वावधान में पुंग चोलम एवं ढोल चोलम नृत्य का मनोहारी प्रस्तुतिकरण किया गया। श्रीरंग मंदिर में आयोजित इस कार्यक्रम की विविधताओं को देख लोगों का उत्साह बढ़ता ही जा रहा था। इस दौरान मणिपुर कल्चरल ग्रुप के श्याम सिंह ने बताया यह मणिपुर का प्रसिद्ध नृत्य है। मांगलिक अवसरों पर इसका प्रस्तुतिकरण होता है। वृन्दावन शोध संस्थान के शासी परिषद सदस्य उदयन शर्मा ने कहा होली ब्रजमंडल का प्रसिद्ध त्यौहार है। उल्लास के इस महोत्सव पर संस्थान द्वारा इसका आयोजन श्रीरंग मंदिर में उत्तर मध्य सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से किया जा रहा है। श्रीरंग मंदिर की मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनघा श्रीनिवासन ने कहा रंगभरनी एकादशी के अवसर पर इस

कार्यक्रम के माध्यम से हमारा उद्देश्य होली के उत्साह में आनन्द की वृद्धि करना है।

उन्होंने कहा सुदूर क्षेत्रों से आने वाले श्रद्धालु जन यहाँ इस कार्यक्रम के माध्यम से आनंदित हुए हैं। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने सभी कलाकारों का प्रसादी दुपट्टा उढ़ाकर अभिनंदन किया। आयोजन में मणिपुर से पधारे श्याम सिंह, शरतचंद्र, सुमोरजित, प्रियाकांत, कौशल, कुणाल, सपना, फाइली एवं ईमोइनू आदि ने अपनी प्रस्तुतियों से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर नटवर, कान्हा, शरद शर्मा, राकेश दुबे, रंगा स्वामी विश्वास, रामभजन, चौबी स्वामी, लखनलाल पाठक, रजत शुक्ला, सुकुमार गोस्वामी, उमाशंकर पुरोहित, श्रीकृष्ण गौतम, डॉ0 राजेश शर्मा, प्रगति शर्मा, ममता झा, जुगल शर्मा, शिवम शुक्ला, ब्रजेश कुमार, भगवती, गोपनंदन आदि उपस्थित रहे।

2 दैनिक जागरण

आगरा/मथुरा, 15 मार्च 2022

www.jagran.com

रंगजी मंदिर में पुंग चोलम व ढोल चोलम नृत्य ने किया मुग्ध

...स, वृंदावन: रंगभरनी एकादशी पर ...दावन शोध संस्थान ने संस्कृति ...लय के निर्देशन में रंगजी मंदिर ...उत्तर मध्य सांस्कृतिक केंद्र ...ज के सहयोग से पुंग चोलम ... चोलम नृत्य का मनोहारी ... किया। कलाकारों ने जब प्रस्तुति दी तो दर्शकों की ... वातावरण गूंज उठा।

...दिर में सोमवार को ...रल ग्रुप के श्याम सिंह ... मणिपुर का प्रसिद्ध ... अवसरों पर इसका ... है। वृंदावन शोध ... परिषद सदस्य ..., होली ब्रजमंडल का प्रसिद्ध त्योहार है। उल्लास के पर्व पर संस्थान ने इसका आयोजन रंगजी मंदिर में उत्तर मध्य सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से किया है। मंदिर की मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनघा श्रीनिवासन ने कहा रंगभरनी एकादशी पर कार्यक्रम का उद्देश्य होली के उत्साह को बढ़ाना है। श्याम सिंह, शरतचंद्र, सुमोरजित, प्रियाकांत, कौशल, कुणाल, सपना, फाइली व ईमोइनू ने अपनी प्रस्तुतियों से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। नटवर, कान्हा, शरद शर्मा, राकेश दुबे, रंगा स्वामी विश्वास, रामभजन, चौबी स्वामी, लखनलाल पाठक, रजत शुक्ला, सुकुमार गोस्वामी मौजूद रहे।

शोध - प्रकाशन गतिविधि : 2021-22

अन्य शोध गतिविधियाँ—

सत्रान्तर्गत अनुभाग द्वारा निम्नानुसार विविध कार्य सम्पन्न हुए -

- साँझी महोत्सव - 2021 तथा ब्रज संस्कृति संस्करण-2021 के संबंध में लगभग 30 से अधिक संस्कृति प्रेमी विज्ञजनों से वार्ता एवं तदानुसार विषय आदि निर्धारण
- उ.प्र.संस्कृति विभाग एवं वृंदावन शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय रामायण कान्क्लेव (6 एवं 7 अक्टूबर 2021) के संबंध में रिपोर्ट अभिलेखन तथा सम्पर्क आदि कार्य।
- संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के पूर्व सचिव तथा ए.एस.आई. के वरिष्ठ सलाहकार श्रीरवीन्द्र सिंह जी के साथ संस्थान परिदर्शन के साथ ही वृंदावन के प्राचीन श्रीगोविन्ददेव, मदनमोहन, राधाबल्लभ मंदिर का परिभ्रमण एवं विषयसम्मत परिचर्चा।
- गोविन्द बल्लभ पंत जयंती के अवसर पर वेविनार हेतु विषयसम्मत संदर्भ इंटरनेट के माध्यम से संकलित कर श्रीवृंदावनविहारी जी को प्रदान किये।
- ब्रज संस्कृति संस्करण में पधारे लगभग 15 विज्ञजनों की आडियो/वीडियो रिकॉर्डिंग डिजिटाइजेशन अनुभाग में संरक्षित कराये गये।
- समाज गायन परंपरा पर आधारित प्रारूप तैयार कर निदेशक महोदय के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया गया।
- गीतामृत पुस्तक का टंकण एवं प्रूफ संशोधन कार्य पूर्ण किया गया।
- अनुभाग में पधारे 30 संस्कृति प्रेमी विज्ञजनों/शोधार्थी/श्रद्धालु पर्यटकों से विभिन्न विषयों पर परिचर्चा की गई।
- ब्रज की अकबरकालीन पुस्तक ठौर के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य पूर्ण कर डिमाई आकार में पुस्तक व्यवस्थित की गई।
- उ.प्र.संगीत नाटक अकादमी एवं वृंदावन शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में शहीद दिवस के अवसर पर आयोजित 'यात्रा आजादी की' नृत्य नाटिका के अंतर्गत रिपोर्ट अभिलेखन कार्य संपन्न।